म्हारा हरियाणा, सक्षम हरियाणा

CREATIVE ANDCRITICAL THINKING REFERENCE & PRACTICE MATERIAL

Hindi, Class-7

(अपूर्व अनुभव , रहीम के दोहे व कंचा पाठाधारित)

TESTING AND ASSESSMENT WING

STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH & TRAINING

GURUGRAM (HARYANA)

प्रतिमान-1 (अपूर्व अनुभव के आधार पर स्वरचित संस्मरण)

चारों ओर अग्रसेन जयंती की तैयारियां चल रही थी ; मैं चुपचाप मूर्ति सी बनी देख रही थी क्योंकि किसी भी सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने की अनुमति पिता ने मुझे नहीं दी थी ।मैं थकी-थकी विद्यालय के हॉल में पहुंची, जहां भारतेंदु हरिश्चंद्र का 'अंधेर नगरी चौपट राजा 'प्रहसन खेला जा रहा था वहां जाकर मैं चुपचाप खड़ी हो गई ।गुरु जी महंत के किरदार के लिए कोई बच्चा नहीं मिल रहा था।शशि गर्ग मैडम (संस्कृत प्रवक्ता) ने इशारा किया कि एक बार तुम बोल कर दिखाओ। मैं एक -एक डायलॉग को ऐसे बोलते चली गई मानो मैं स्वयं ही महंत हूँ। डायलॉग खत्म होने पर चारों ओर तालियों की गड़गड़ाहट सुनी तो मेरी तंद्रा टूटी ; नाटक प्रथम आया। विद्यालय में मैं गुरु जी के नाम से प्रसिद्ध हो गई। किंतु पिताजी को सारी घटना के बारे में पता चल गया। पिताजी से चोरी छिपे विद्यालय की गतिविधियों में भाग लेने लगी। प्रार्थना सभा में हारमोनियम बजाती, प्रार्थना करवाती। विद्यालय में होने वाली सभी सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेने लगी। समय अंजलि के रेत की तरह है मुट्ठी से भाग रहा था। दो वर्ष बाद समाज सेवा समिति में कव्वाली का प्रोग्राम होना था ; बाली मैडम के आदेश पर मैंने कव्वाली में भाग लिया किंतु पिताजी आकर मैडम को समझा गए कि मेरी बेटी बाहर नहीं जाएगी। मैडम ने उन्हें सब प्रकार से समझाया किंतु तब वे नहीं माने। फिर मैडम ने मुझे शारदा मैडम के साथ कव्वाली के लिए समिति भेज दिया। मैं इसे भाग्य कहूं या दुर्भाग्य, मुझे नहीं पता। वहां मुख्य अतिथि ही दो बजे पहुँचे और कार्यक्रम को समाप्त होते-होते 5:00 बज गए ।इस बीच पिताजी ने पूरे परिवार को दौड़ाया। अंत में उन्हें याद आया कि बाली मैडम आज समाज सेवा समिति में कव्वाली का प्रोग्राम बता रही थी।

उन्होंने चाचा को भेजा। जब वहां चाचा पहुंचे तो प्रथम पुरस्कार की घोषणा हो रही थी , मैं ग्यारह सौ रुपए और बड़ी सी ट्रॉफी के साथ चाचा के साथ साइकिल पर सवार हो गई।मन ही मन हनुमान चालीसा गाती जा रही थी। चाचा पिताजी के नाम से डरा रहे थे।घर में पहुँचते ही देखा द्वार पर पिताजीबैठे हुए थे। मैंने इनाम की राशि और ट्रॉफी पिताजी की गोद में रख दी और स्वयं एक तरफ हो गई। पिताजी की आंखें तृप्त भंवरे की भांति इनाम पर ही घड़ी रही। एकाएक आंखों से आंसुओं की बदली फूट पड़ी और भर्राए गले से बोले- जा अनीता, आज से सारा आकाश तुम्हारा है। बस कुल की मर्यादा

का ध्यान रखना। इस प्रकार मैंने अपने दरवाजे खोले और अन्य बेटियों के लिए बाहर निकलने के रास्ते खोजे।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1 लेखिका के पिताजी उसे मंचीय क्यों नहीं बनाना चाहते थे?

क. क्योंकि उन्हें मंचों से डर लगता था

ख. उस समय बेटियों का मंचीय होना अच्छा नहीं माना जाता था

ग. मंचो पर जाने के बाद बेटियां बिगड़ जाती हैं

घ. इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 2 प्राचार्य ने लेखिका की सहायता क्यों की?

क. वे प्रतिभा पारखी थी।

ख. वे लेखिका से प्रेम करती थी

ग. लेखिका को ऊंचाइयां प्रदान करना चाहती थी

घ. उपरोक्त सभी

प्रश्न 3 लेखिका के पिताजी ने परिवार के सदस्यों को क्यों दौड़ाया?

क. लेखिका को खोजने के लिए

ख. पिताजी भयभीत हो गए

ग. लेखिका को डांटना चाहते थे

घ. इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 4 लेखिका अपनी कमाई में से 4000 रूपये बचाती है । यदि यह उसकी कमाई का 10% है तो लेखिका की कमाई कितनी होगी?

क 40000

ख 50000

ग 70000

घ 80000

प्रश्न 5 मन के हारने से हार कैसे हो जाती है?

-डॉ० अनीता भारद्वाज , प्रवक्ता, राजकीय उच्च कन्या विद्यालय सांजरवास बौंन्दकलां चरखी दादरी

प्रतिमान-2 (अपूर्व अनुभव के आधार पर स्वरचित संस्मरण)

स्थानांतरण प्रक्रिया में मनवांछित स्टेशन प्राप्त कर नए विद्यालय के प्रांगण में प्रवेश हुआ। मैं इस नए विद्यालय के माहौल से बिलकुल अपरिचित थी। नियमानुसार मुझे कक्षा ग्यारहवीं की प्रभारी नियुक्त किया गया। पहला दिन था। केवल परिचय हुआ। अपनी नई शिक्षिका को देखकर विद्यार्थी काफ़ी उत्साहित थे। प्रथम दिन ही मैंने यह देखना चाहा कि ऐसे कौन से विद्यार्थी हैं , जो पाठ को धारा प्रवाह पढ़ भी नहीं सकते ? मैंने देखा कि एक बच्चा ..मैं.... आ.... इस तरह से जोड़ जोड़कर पढ़ने की कोशिश कर रहा है। एक दूसरे छात्र ने कहा कि मैम यह हकलाता है, पर उसके चेहरे पर कुछ अलग ही भाव थे। मैंने उसे हिम्मत देते हुए केवल एक पंक्ति पढ़ने को कहा। वह नहीं पढ़ पाया। मेरा मन यह मानने को तैयार नहीं था कि यह पढ़ नहीं पाएगा। मैंने उसकी समस्या को भाँप लिया था। उसका हौंसला बढ़ाते हुए कहा -बेटा, आप पढ़ सकते हो। शीशे के सामने पढ़कर दिखाओगे तो शीशा भी यही कहेगा। अगले दिन बारी आने पर उसने पूरी पंक्ति अटक अटककर पढ़ दी।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1. वाचन से क्या तात्पर्य है?

(क) पाठ को लिखना (ख) पाठ को याद करना

(ग) पाठ को पढ़ना (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 2. एक टंकण मशीन से अरिजीत 3 मिनट में 150 शब्द अंकित करता है। 25000 शब्द अंकित करने में अरिजीत को कितना समय लगेगा?

(क) 400 मिनट (ख)500 मिनट

(ग) 100 मिनट (घ) 200 मिनट

प्रश्न 3. कक्षा में नए शिक्षक के आने पर बच्चे उत्साहित क्यों हो जाते हैं ?

प्रश्न 4. शिक्षिकाका मन यह मानने के लिए तैयार क्यों नहीं है कि बच्चा पढ़ नहीं सकता ?

प्रश्न 5. हकलाने वाले बच्चे अक्सर चुप क्यों रहते हैं ?

- **ललिता पहल, प्रवक्ता, रा. व.मा. वि. साँवड़ , बौन्दकलां**

प्रतिमान-3 (अपूर्व अनुभव आधारित)

गाड़ी खराब होने के कारण मीनू को घर जाने के लिए कोई साधन न मिला तो वह रात के अंधेरे में पैदल चल पड़ी। सूनी और अंधेरी सड़क पर डरावना वातावरण था। तभी कुछ मनचले लड़कों ने मीनू को देखकर अपनी भूख मिटाने की सोची। मानों वे बहुत दिनों से इस पल के इन्तजार में थे। ज्योंहीं वे मीनू के पास पहुंचने वाले थे तभी एक नौजवान आया और बोला,'घबराना नहीं मैं तुम्हारे साथ हूँ।' इस दृश्य को देख वे लड़के हक्के - बक्के रह गए। मीनू भी एक अनजान व्यक्ति के मुख से ऐसे शब्द सुनकर हैरान हो गई और उसे कुछ पल विश्वास भी न हुआ। मीनू ने सोचा, इसकी बातों से यह एक अच्छा इंसान जान पड़ता है। खैर!दूसरे लड़को ने अपना रास्ता बदला और चले गए।

थोड़े से समय वे इकट्ठे चले और मीनू के घर पहुँच गए।उसने उस अनजान व्यक्ति से हाथ जोड़कर धन्यवाद किया। नौजवान बोला, 'इसमें धन्यवाद का तो प्रश्न ही नहीं है। एक बहन की रक्षा करना हर भाई का फर्ज होता है।मैने वही फर्ज निभाया है।' मीनू पुनः अचम्भित होकर बोली , 'बहन.......न जानकार, न कभी देखा। एक अकेली महिला को अंधेरी रात में बहन कहने वाला आदमी नही हो सकता।' ये कहकर मीनू रो पड़ी। 'और कौन हो सकता है?' नौजवान ने कहा। 'फरिश्ता......' मीनू बोली।

प्र 1 इस प्रसंग में मीनू को क्या डर लग रहा था ?

प्र 2 आपने यदि ऐसी कोई घटना सुनी या देखी हो तो अपने शब्दों में लिखे।

प्र 3 मीनू के जीवन का यह अनुभव कैसा था ?

प्र4 यदि मीनू 5 कि.मी. प्रति घंटा की चाल से पैदल चली हो और घर 12 मिनट में पहुंची हो तो उसका घर घटना स्थल से कितनी दूर था ?

प्र 5 मीनू के भाई ने उसको रक्षाबंधन के अवसर पर 500रु का सूंट 2100रु की साड़ी और 950 की घड़ी दी।मीनू के भाई मे कुल कितनी राशि खर्च की ?

- **मामला राम प्रवक्ता, हिन्दी, रा. व. मा.वि. सोंगल कैथल**

प्रतिमान - 4 (अपूर्व अनुभव आधारित)

भारत के उत्तर प्रदेश की पूर्व राष्ट्रीय स्तर की वॉलीबॉल खिलाड़ी अरुणिमा सिन्हा की वह 2011 की सबसे दुर्भाग्यपूर्ण घटना , जिसमें उन्होंने अपना एक पैर खो दिया। जब कुछ लुटेरे उनकी गले की चेन लूटना चाहते थे तो उन्होंने पुरजोर विरोध किया। तब लुटेरों ने उन्हें चलती ट्रेन से धक्का दे दिया, जिससे वह एक दूसरी पटरी से गुजरती ट्रेन की चपेट में आ गई और बुरी तरह से घायल हो गई।उनका एक पैर टूट गया। यह वह समय था, जब सभी उन्हें लाचार और बेबस समझ रहे थे। वो नहीं चाहती थी कि लोग उन पर दया करें,तब उन्होंने अपनी सकारात्मक मनोवृति को अपनाया और अपने कृत्रिम पैर को अपनी ताकत में बदल दिया। उन्होंने जीवन में अपने आप को साबित करने के लिए कुछ करने का फैसला किया। अरुणिमा सिन्हा माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली दुनिया की पहली विकलांग महिला बनी। इंसान अपनी सोच से व दिमाग से विकलांग होता है। यदि आपकी सोच सकारात्मक है तो हाथ पैरों की विकलांगता कोई मायने नहीं रखती। अरुणिमा सिन्हा ने लखनऊ में 120 विकलांग बच्चों को गोद लिया है और हर संभव तरीके से उनकी मदद कर रही है। अरुणिमा सिन्हा का यह जुनून केवल एक महिला के विश्व के सर्वोच्च शिखर पर चढ़ाई करने की कहानी नहीं है , बल्कि उनके अटूट विश्वास की दास्तां भी है ,जिसके दम पर उन्होंने निराशा के हाथों मजबूर होने के बजाय बड़ी बाधाओं को पार कर अपनी सबसे बड़ी कमजोरी को बड़ी ताकत बनाने की हिम्मत दिखाई।

गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें-

प्रश्न1 इंसान अपनी सोच से व दिमाग से विकलांग होता है, कैसे?

प्रश्न 2 माउंट .एवरेस्ट पर चढ़ने वाली अरुणिमा सिन्हा दुनिया की पहली विकलांग महिला कैसे बनी?

प्रश्न3 माउंट एवरेस्ट की ऊंचाई8848 मीटर है, एक पर्वतारोही यदि 1दिन में 150 मीटर ऊपर चढ़ता है तो वह माउंट एवरेस्ट की चोटी पर कितने दिन में पहुंच जाएगा?

प्रश्न 4 एक अकादमी में120 बच्चे हैं। यदि एक बच्चे का 1 दिन का खर्च 150रुपए हो तो 120 बच्चों का 1 दिन का खर्च कितना आएगा?

प्रश्न5. बाधाओं को पार करते हुए हम अपने लक्ष्य को कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

-ओमप्रकाश, प्रवक्ता, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मिट्ठी सुरेरां, सिरसा

प्रतिमान-5 (अपूर्व अनुभव आधारित)

जिनके मन में कुछकर दिखाने का जज्बा हो, जोश और जुनून हो, वह कभी किसी बाधा से नहीं घबराते, किसी रूकावट से नहीं रुकते। हिमालय भी उनके आगे बौना होता है। बाधाओं को पार करने का साहस भी हमारे अंदर से आता है, जिसके लिए हमें अपने आत्मबल को बढ़ाना होता है और जिसने एक बार अपने आत्मबल को बढ़ा लिया, उसने दुनिया को जीत लिया। ऐसा ही किया है अरुणिमा सिन्हा ने जो माउंटएवरेस्ट फतह करने वाली पहली भारतीय दिव्यांग महिला हैं। लखनऊ से दिल्ली जाते समय बरेली में उनका बैग और सोने की चेन छीनने के प्रयास में कुछ अपराधियों ने उसे रेलगाड़ी से बाहर धकेल दिया था, जिसके कारण वह अपना एक पैर गंवा बैठी थी। उसका जीवन बचाने के लिए डॉक्टरों ने घुटने के नीचे से पैर काट दिया और दूसरे पैर में राड़ डालकर उसे ठीक कर दिया। लंबे समय तक अस्पताल में रहने के बाद अरुणिमा ने एक कृत्रिम पैर लगवाकर एवरेस्ट फतह करने का इरादा किया।

दुर्घटना के बाद जिस हालात में अरुणिमा थी, उस हालत में हिल पाना भी मुश्किल होता है, लेकिन मजबूत इरादों वाली अरुणिमा की कहानी कभी धैर्य न खोने वाले जज्बे की कहानी साबित हुई। उसके परिवार और उसके जीजा ओमप्रकाश ने उन्हें हौंसला दिया और अरुणिमा को उनके लक्ष्य की ओर प्रेरित किया। उन्होंने एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाली पहली भारतीय महिला बछेन्द्री पाल से प्रशिक्षण प्राप्त किया। उनकी यात्रा शुरू हुई और फिर वह दिन भी आया, जब मंजिल तय हुई।

गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें-

प्र०1. अरुणिमा सिन्हा विकलांगता की शिकार कैसे हुई?

प्र०2. हिमालय की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट किस देश में स्थित है?

प्र०3. अरुणिमा सिन्हा ने पर्वतारोहण का प्रशिक्षण किससे प्राप्त किया?

प्र०4. लखनऊ से दिल्ली की दूरी 540 किलोमीटर है। एक रेलगाड़ी बिना रुके 90 किलोमीटर प्रति घंटा की चाल से लखनऊ से चलकर दिल्ली कितने समय में पहुंचेगी?

प्र०5. अरुणिमा ने अपने गले में चार तोले की सोने की चेन पहनी हुई थी। उस समय सोने का भाव 32640 रूपये प्रति तोला था तो बताओ अपराधियों ने कितनी कीमत का सोना लूटने के लिए अरुणिमा को रेलगाड़ी से नीचे गिराया था?

- **सुभाष चंद्र, प्रवक्ता,राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कुत्ताबगढ,सिरसा**

प्रतिमान-6 (अपूर्व अनुभव आधारित)

"आज ये तुम्हारे शिक्षक हैं। ये तुम्हें ढेरों नई नई बातें बताएंगे ।यों परिचय दिया था हैड मास्टर जी ने एक नए शिक्षक का। तोत्तो -चान ने उनकी ओर ध्यान से देखा। एक तो उनकी पौशाक ही शिक्षकों जैसी नहीं थी। तोत्तो -चान नए शिक्षक को ध्यान से देख रह थी। उसे लगा , उसने पहले भी उन्हें कहीं देखा है। कहां देखा होगा ? वह सोचती रही। उनका झुर्रीदार चेहरा धूप में तपा हुआ था। बेल्ट की जगह एक काली रस्सी बंधी हुई थी। रस्सी के एक छोर से एक काला पाइप लटक रहा था। वह भी तोत्तो -चान को पहचाना-परिचित लग रहा था। और ठीक तभी उसे याद आ गया।

"आप नहर के किनारे खेती करते हैं ना "!उसने खुश होते हुए कहा।

"बिल्कुल ठीक, "नए शिक्षक बोले। उनकी मुस्कान से उनके चेहरे की झुर्रियां और गहरा गयीं। "जब कभी तुम बच्चे कुहोन्बुत्सु की ओर सैर करने निकलते हो तब तुम्हें मेरे खेत के पास से गुजरना पड़ता है। मेरा खेत वही तो है जिसमें सरसों के फूल खिले हुए हैं।"

"ओहो !और आज आप हमारे टीचर होंगे।-बच्चे बड़े उत्साहित होकर चिल्लाए।

"नहीं, नहीं। "उन्होने हाथ हिलाते हुए कहा ," मैं टीचर-वीचर नहीं हूँ। मैं एक किसान हूं , तुम्हारे हैड मास्टर जी ने मुझे कहा है कि मैं कुछ बताऊँ। बस इसीलिए आया हूं।"

"न, यह बात सच नहीं है। ये सच में शिक्षक हैं। खेती -बाड़ी के शिक्षक। "हैड मास्टर जी ने उनके पास आकर कहा। "और इन्होंने कृपा कर मेरा आग्रह माना है। "ये बताएंगे कि खेत में फसल कैसे बोई जाती है। जैसे कोई तंदूर वाला हमें यह सिखा सकता है कि डबलरोटी कैसे बनाई जाती है, वैसे ही यह भी सीखा जा सकता है कि खेत में फसल कैसे बोई जाती है। किसी भी सामान्य प्राथमिक पाठशाला में कुछ भी पढ़ाने से पहले शिक्षक की कागजी शैक्षणिक -योग्यता जरूरी मानी जाती है। पर श्री कोबायाशी ऐसी चीजों की परवाह नहीं करते थे। उनका मानना था कि बच्चे किसी को कुछ करते हुए देखने के बाद खुद उसे अपने हाथों से करके सीख सकते हैं।

शिक्षक के कहने पर बच्चे फावड़े, कुदालें ले आए। तब शिक्षक ने उन्हें खरपतवार के बारे में बताया। बताया कि वे बड़ी बेशर्मी से उगते हैं। अनाज के पौधों से कहीं तेजी से बढ़ते हैं और इतने ऊंचे हो जाते हैं कि धूप रोक लेते हैं। उनके बीच हर तरह के कीड़े -मकोड़े अपना घर बनाते हैं। और तो और , खरपतवार अपने बढ़ने के लिए जमीन से पानी और खाना भी सोख लेते हैं । नए टीचर सब बातें एक के बाद एक बताते जा रहे थे। हाथ बराबर काम कर रहे थे। हाथों से वे खरपतवार उखाड़ते जा रहे थे। बच्चे भी उनकी देखा-

देखी सब ओर से खरपतवार उखाड़ने लगे। इसके बाद उन्होने कुदाल का इस्तेमाल सिखाया। बीज बोने के लिए कतारें कैसे बनाते हैं , यह बताया। खाद कैसे छिड़की जाती है, यह बताया। और भी ढेरों बातें बतायीं जो खेती के लिए जरूरी होती हैं। यह सब उन्होने कर के दिखाया।

इतने में खेत के एक कोने से छोटा-सा सांप निकला और एक बड़े लड़के ता-चान के हाथ पर उसने डस ही लिया होता। पर खेती -बाड़ी के शिक्षक ने बताया ,"यहां के सांप जहरीले नहीं हैं। जब तक आदमी तंग न करें, वे नुकसान भी नहीं पहुंचाते।"

खेत को बोने का तरीका बताने के अलावा नए शिक्षक ने कीड़े -मकोड़ों,चिड़ियों, तितलियों और मौसम के बारे में भी बड़ी मजेदार बातें बतायीं। जो कुछ भी वह कह रहे थे , सब उनके अनुभव से जानी-परखी बातें थीं।

बच्चे पसीने से तरबतर थे। वे नए टीचर की मदद से खेत बो चुके थे। कुछ कतारें टेढ़ी मेढ़ी थीं, पर उन्हें अनदेखा किया जाए तो पूरा खेत करीने से बोया लगता था।

इस दिन के बाद बच्चे उस किसान का सम्मान करने लगे और जब भी उन्हें देखते , तुरंत चिल्ला पड़ते,"वो रहे हमारे खेती बाड़ी के शिक्षक।"

1. किसान ने बच्चों को बताया कि उसके खेत में सरसों के फूल खिले हुए हैं, इसका मतलब उस समय कौन सी फसल का मौसम चल रहा था ?
   क. रबी
   ख. खरीफ
2. खरपतवार सूर्य की रोशनी को रोक लेते हैं। सूर्य की रोशनी पौधों के लिए क्यों आवश्यक है ?
3. उपरोक्त विवरण के आधार पर बताएं कि श्री कोबायाशी कौन हैं ?
   क. किसान ख. हैडमास्टर ग. विद्यार्थी घ. तंदूर वाला
4. खरपतवार किस प्रकार फसल को नुकसान पहुंचाते हैं ?
   क. धूप रोककर ख. ज़मीन से पानी सोखकर
   ख. तेज़ी से बढ़कर घ. उपरोक्त सभी
5. यदि किसान के खेत की लंबाई 260 मीटर तथा चौड़ाई 130 मीटर है तो खेत का क्षेत्रफल कितना होगा ?

-चेतना जाठोल, बी0 आर0 पी0 हिन्दी, मातनहेल, झज्जर

प्रतिमान-7 (अपूर्व अनुभव आधारित स्व-रचित गद्यांश)

गर्मियों की तपती दुपहर थी। जब घर के सारे सदस्य थककर सो गए तो पूर्वी दबे पावों से कमरे से बाहर निकल आई। कल ही उसने कबीर से वादा किया था कि वह उसे आम का बाग दिखाने लेकर जाएगी। भीतर से थोड़ी घबराई हुई पूर्वी ने दबे पाँव से माँ और दादी के कमरों में झाँका। दोनों ही गहरी नींद में थी । पूर्वी घर से निकल गई। चलते समय उसने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। जल्दी-जल्दी चलकर वह कबीर के घर के सामने पहुँच गई। इससे पहले वह दरवाज़ा खटखटाती दरवाजा खुल चुका था। कबीर तैयार खड़ा था। उसे देखते ही पूर्वी के चेहरे पर मुस्कान तैर गई। बाहर धूप तेज़ होने के कारण पूर्वी अपने साथ छाता लाई थी, क्यूंकि वह जानती थी कि पोलियो से ग्रस्त होने के कारण कबीर धीरे-धीरे चलेगा। यही वजह थी कि कबीर को कोई बाहर घुमाने नहीं लेकर जाता था। कबीर और पूर्वी एक ही कक्षा में पढ़ते थे। एक दिन जब कक्षा में सभी बच्चे आम के बाग से आम तोड़ने की बातकर रहे थे और कबीर चुपचाप उनकी तरफ ललसाई आँखों से देख रहा था, तभी पूर्वी ने उसका चेहरा पढ़ लिया था और उसने यह निश्चय किया था कि वह एक दिन कबीर को आम का बाग जरूर दिखाएगी।

गद्यांश आधारित प्रश्न-

1. 'दबे पाँव चलना' मुहावरे से क्या अभिप्राय: है?

2. यदि एक किलो आम 45 रूपए में आते हैं, तो 6 किलो 250 ग्राम आम कुल कितने रूपए में आएँगे?

3. मुस्कान और हँसी में क्या अन्तर है? 40 से 50 शब्दों में स्पष्ट करें।

4. जून के महीने में सामन्यतः तापमान, न्यूनतम और अधिकतम कितने डिग्री होता है?

5. ' पोलियो शरीर के किस अंग को प्रभावित करता है

-क) नाक ख) आँख ग) पैर घ) लिवर

- इन्दु बाला ,प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, गुरुग्राम

प्रतिमान - 8 (अपूर्व अनुभव आधारित स्व-रचित गद्यांश)

रोहित कक्षा सातवीं में पढ़ता था। वह पढ़ाई में बहुत होशियार था । रोहित पोलियो ग्रस्त था। इसलिए उसे चलने फिरने में बहुत कठिनाई होती थी। दाईं टांग को सहारा देने के लिए उसे विशेष प्रकार के जूतों को पहनना पड़ता था। खेलकूद की घंटी में उसकी कक्षा के सभी बच्चे खेलते कूदते मस्ती और धमाल करते परंतु रोहित अकेला बैठकर उदास हो जाता और बे मन से अपनी कक्षा के सभी बच्चों को खेलते हुए देखता रहता । कभी-कभी वह इसे अपना दुर्भाग्य समझता। उसकी कक्षा में मोहित नाम का लड़का उसका अच्छा मित्र था, जो पढ़ाई में बहुत होशियार था और फुटबॉल का बहुत अच्छा खिलाड़ी भी था। उसने देखा कि रोहित बहुत उदास है। मोहित ने रोहित की उदासी का कारण पूछा तो रोहित ने बताया कि मेरा भी मन करता है कि मैं तुम्हारे साथ खेलूं I काश ऐसा हो पाता। मोहित ने कहा- तुम चिंता मत करो। आज से तुम भी हमारे साथ खेलोगे।

मोहित ने उसे साहस दिया और उसे अपनी टीम का गोल कीपर बना दिया। रोहित अब खेलकूद की घण्टी का इंतजार करता है और बहुत मस्ती के साथ खेलता है । अब वह न तो उदास होता है और नही इसे अपना दुर्भाग्य समझता है । रोहित को इस हालात में देखते हुए मोहित की खुशी का भी ठिकाना नहीं रहता।

प्रश्न 1:-पोलियो नामक बीमारी की रोकथाम के लिए सरकार द्वारा समय-समय पर क्या कदम उठाए जाते हैं?

प्रश्न 2:-रोहित की उदासी का क्या कारण था?

प्रश्न 3:-मोहित की खुशी का ठिकाना नहीं रहता, इसके क्या कारण थे?

प्रश्न 4:-यदि एक फुटबॉल का मूल्य 250 रू है तो 5000 रू में कितनी फुटबॉल आएंगी ?

(1)24 (2)22 (3)20 (4)18

प्रश्न 5 पोलियो टांग के अलावा शरीर के किस अंग को प्रभावित कर सकता है ?

-क) नाक ख) आँख ग) हाथ घ) लिवर

-दलबीर सिंह, प्रवक्ता, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बारोदा, जींद

प्रतिमान-9 (अपूर्व अनुभव आधारित स्व-रचित गद्यांश)

हर सफल इंसान की जिंदगी में संघर्ष की कहानी अवश्य होती है | जिंदगी में अगर आप कुछ कर पाना चाहते हो तो उसके लिए संघर्ष करना आवश्यक हो जाता है | यदि आप अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़ निश्चय और अथक परिश्रम के द्वारा संघर्ष कर रहे हैं तो यह समझ लीजिए कि सफलता आपके बिल्कुल निकट ही है और जो इन संघर्षों का सामना करने से घबराते हैं जीवन में हार जाते हैं | इस दुनिया में असंभव कुछ भी नहीं है| बस दृढ़ इच्छाशक्ति और बुद्धि का उपयोग करके पूरे जज्बे के साथ उस कार्य में जुट जाओ। फिर देखिए सफलता कैसे आपके कदम चूमती है| कहते हैं कि अगर आप किसी चीज को दिल से मांगो या किसी का कोई कार्य बड़ी शिद्दत के साथ करेंगे तो पूरी कायनात तुम्हारे साथ लग जाएगी |हम चाहे तो अपने आत्मविश्वास और मेहनत के बल पर अपना भाग्य स्वयं लिख सकते हैं |अगर हमें अपना भाग्य लिखना नहीं आता तो परिस्थितियां हमारा भाग्य लिख देंगी |जीवन में समय समय पर चुनौतियों- का सामना करना पड़ता है| यह कठिनाइयां/चुनौतियां हमें बर्बाद करने नहीं आती बल्कि हमारे अंदर छिपे हुए सामर्थ्य और शक्तियों को बाहर निकालने में हमारी मदद करती है | उत्साह का होना, स्वयं पर विश्वास रखना ही हमारी सफलता की पहली सीढ़ी है |यदि हम अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए बड़े जुनून से किसी कार्य को करते हैं तो बड़े से बड़ा कार्य भी चुटकियों में कर सकते हैं | कहते हैं न 'जहां चाह वहां राह ' अर्थात अगर आपकी इच्छा शक्ति दृढ़ है तो रास्ते तो अपने आप ही निकलते चले जाएंगे और आप अपने लक्ष्य में सफल भी हो जाओगे |

प्र01. अनुच्छेद में आए मुहावरा या लोकोक्ति को छांट कर लिखिए|

प्र02. आप ने अपनी जिंदगी का लक्ष्य बनाया है?चार पंक्तियों में उत्तर दीजिए|

प्र03.हमारा भाग्य कौन लिखता है ?

प्र04.सफलता प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए |

प्र05.एक व्यक्ति ने सफलता प्राप्त करने के लिए 300 अंक प्राप्त किए| जिसमें उसके मेहनत के 15% अंक है, ईमानदारी के 30% अंक मिले |आत्मविश्वास के लिए 22% अंक तथाबुद्धिमानी के लिए 33% अंक प्राप्त किए| तो उसके मेहनत और बुद्धिमानी के अंकों का जोड़ बताइए|

-प्रवीन कुमारी,प्रवक्ता, रा0 व0 मा0 विद्यालय लाखनमाजरा रोहतक

प्रतिमान-10 (अपूर्व अनुभव आधारित)

एक गांव में दो मित्र रहते थे। एक 12 वर्ष का था जो अपंग था। दूसरा 8 वर्ष का था। दोनों में गहरी मित्रता थी। वे एक साथ उठते- बैठते, खेलते, स्कूल जाते इत्यादि। दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे। आठ वर्ष का रिंकू 12 वर्ष के पिंकू की हर जगह मदद करता था। एक दिन दोनों ने घूमने का विचार किया। दोनों ने अपने घरवालों को नहीं बताया। छुट्टी का दिन था। पिंकू गांव से बाहर आकर बहुत आनंद महसूस कर रहा था। वे दोनों एक कुएं की मुंडेर पर बैठे थे। अकस्मात पिंकू कुएं में गिर गया। वह जोर -जोर से चिल्लाने लगा क्योंकि उसे तैरना नहीं आता था। रिंकू ने चारों तरफ नजर दौड़ाई लेकिन दूर -दूर तक कोई मदद करने वाला नहीं था। उसने वहां पास में रस्सी के बंधी बाल्टी देखी। उसने बिना देरी किए उस बाल्टी को कुएं में फेंक दिया। पिंकू ने उस बाल्टी को पकड़ लिया, आखिर रिंकू ने रस्सी के साथ बाल्टी सहित दोस्त को खींचना शुरू किया है। वह खींचता रहा, खींचता रहा और पूरी जान लगा दी। आखिर उसने अपने मित्र को बचा लिया। अब उन्हें डर था कि घर जाकर बताएंगे तो घरवाले नाराज होंगे लेकिन देरी होने के कारण उन्होंने यह बात बताने पड़ी। कोईभीउनकीबातपरविश्वासकरनेवालानहींथाकि 8 वर्ष का बच्चा 12 वर्ष के बच्चे को कैसे बचा सकता है। किसी ने विश्वास नहीं किया। एक अनुभवी आदमी रामू काका वहां रहता था। उसने उन पर विश्वास किया। उसने कहा ये बच्चे कभी झूठ नहीं बोलते यदि ऐसा कह रहे हैं तो जरूर ऐसा हुआ होगा। ग्रामीण रामू काका से पूछने लगे, हमें समझ में नहीं आया, आप ही बता दें।

तब उसने कहा कि सवाल यह नहीं है कि छोटा सा बच्चा यह कैसे कर पाया, सवाल यह है कि वह क्यों कर पाया। उसके अंदर इतनी ताकत कहां से आई। इसका सिर्फ यह जवाब है कि जिस समय इस बच्चे ने यह कार्य किया उस समय उस जगह पर दूर -दूर तक कोई यह बताने वाला नहीं था कि यह काम वह नहीं कर सकता। यहां तक कि वह खुद भी नहीं। अतः हमें किसी का भी मनोबल नहीं गिराना चाहिए। कहते हैं मन के हारे हार है मन के जीते जीत।

1.अपंग श्रेणी को आजकल किस नए नाम से जानते हैं?

2. रिंकू व पिंकू की आयु का अनुपात कितना है?

3. रिंकू व पिंकू ने अपने घरवालों को क्यों नहीं बताया कि गांव से बाहर जा रहे हैं?

4.अगर कुए का व्यास 14 मीटर है तो उसके चारों और कितनी लंबी रस्सी आएगी?

5. आप पर सबसे ज्यादा विश्वास कौन करता है और क्यों?

-गजराज सिंह, प्रवक्ता, रा० व० मा० विद्यालय **झाल ,नाहड़, रेवाड़ी।**

प्रतिमान-11 (अपूर्व अनुभव आधारित)

रॉन स्कूल का सबसे फुर्तीला लड़का था। उसका स्कूल पहाड़ों में था, जहां पढ़ाई को ज़्यादा तव ज्जो नहीं दिया करते थे। लेकिन रॉन के अन्दर जैसे कुछ कर दिखाने की ललक थी। वह अक्सर स्कूल के बाकी बच्चों से पहले पहुंच जाया

करता था और क्लास में अंगीठी जलाकर तैयार रखता था, जिससे की टीचर ज़्यादा देर तक पढ़ापाएँ। एक दिन जब बाकी बच्चे और टीचर स्कूल पहुंचे तो देखा क्लास में आग लगी हुई थी और रॉन एक जले हुए गद्दे के नीचे दबा हुआ था। जब उसको अस्पताल लेकर पहुंचे तो डॉक्टर ने उसकी मां से कहा कि अब अगर रॉन बच भी गया तो उसकी ज़िन्दगी बहुत तकलीफदायक होगी। रॉन ने यह सुन लिया। उसका जीने का उत्साह इतना ज़्यादा था कि वह मौत से लड़कर भी वापस आ गया । लेकिन बदकिस्मती से रॉन को बचाने के लिए उसके पैर काटने पड़े। रॉन को जब यह पता चला तो जैसे उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई । डॉक्टर ने कहा रॉन ज़िन्दगी भर कभी चल नहीं पाएगा। कई दिन रॉन अस्पताल के बिस्तर पर पड़ा खिड़की से बाहर देखकर रोता रहा। फिर एक दिन उसकी मां एक व्हीलचेयर पर उसे बिठाकर बाहर मैदान में ले गई। मैदान में पहुंचते ही रॉन के अन्दर जैसे एक नई जानभर गई । उसने अपनी मां से पीछे हटने को कहा और फिर अपने आप को हाथों की मदद से व्हीलचेयर से नीचे फेंक दिया। वह पहली बार ज़मीन पर गिरा तो उसे काफी चोट आई। लेकिन कमर के नीचे हिस्से में कोई अहसास तक नहीं हुआ। उसने भी तय कर लिया कि वह तब तक ऐसा करता रहेगा जब तक उसके पैरों में कोई अहसास नहीं होता। उसने अपने हाथों की मदद से मैदान की मिट्टी पर रेंगना शुरू कर दिया।

वह अपने हाथों से शरीर को आगे खींचता, जिससे उसकी कमर और पैर मिट्टी में घिसटते हुए आगे की तरफ बढ़ते। वह पूरे मैदान में चक्कर लगाने लगा। उसके पैरों से खून आने लगा लेकिन वह नहीं रुका। यह रोज़ की एक प्रक्रिया सी बन गई थी उसके लिए । मैदान के चारों तरफ एक ट्रैक सा बन गया था उसके पैरों को घसीटने के निशान से । एक दिन अंततः उसके पैरों में दर्द महसूस होने लगा। उसके पैरों में वापस जान आने लगी। कुछ दिनों में वह

बैसाखियों की मदद से चलने लगा, फिर बिना उनकी मदद के, और फिर कुछ दिनों में वह दौड़ भी सकता था। रॉन आगे चलकर एक मशहूर डॉक्टर बना जिसने कई निशक्त जनों को नई जान दी।

1 निःशक्तता क्या है ?

2 आप अपने विद्यालय में निःशक्त साथियों की मदद कैसे करते है ?

3 पोलियो उन्मुलन अभियान क्या है ?

4 दृढ़ इच्छा शक्ति सफलता में कैसे मदद करती है ?

5 एक विश्लेषण से पता चला कि पोलियो के केस जो 1988 में पूरे संसार में लगभग 3,50,000 थे, वे 2013 में मात्र 407 ही रह गए थे तो बताओ कि इनमे कितने % की गिरावट हुई ?

-नीरेन पाल सिंह प्रवक्ता ,जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान हुसैनपुर,रेवाड़ी

प्रतिमान-12 (अपूर्व अनुभव आधारित)

एक दिन की बात है। कुछ नटखट लड़के वहां स्नान करने के लिए आए और पानी में मछलियों जैसे तैरने लगे। उनकी मस्ती मैं एक टक देखता रहा। मैं प्रसन्न था। किंतु उन शैतान लड़कों को जाने क्या सूझा ,वे मुझे उठाकर पानी में ले गये। में तैरना तो जानता न था उन्होंने मुझे एक दोबार पानी में डुबकी खिला दी । मेरे अवाक् क्रोध को देखकर उनको और भी आनंद आया। उन्होंने मुझे हैरान, परेशान करके छोड़ दिया। बड़ी कठिनाई से मैं किनारे पहुँचा। किंतु गूँगे मानव को यह अपमान बहुत अखरा। मन बहुत दुखी हुआ। गहरी मानसिक व्यथा हुई। मैं इधर-उधर घूमकर कुछ माँगकर अपना गुजारा करता हूँ इसी कारण तो उन्होंने मेरा मजाक उड़ाया। ऐसी जीविका कितनी हेय है। मैंने सोचा कि माँगना गलत है। उस दिन की शाम मुझे ठीक तरह स्मरण है। मैं उस विशाल सरोवर जैसे बड़े कुएं के किनारे बैठे - बैठे पानी को ताकता रहा। मैंने उस पानी में जैसे अनेक बातें लिखी हुई पाई। ऐसा लगा जैसे पानी मुझसे कुछ कह रहा था। अतः मैंने मूँगे-गूँगे ने कालानुक्रम से एक अच्छे तैराक की ख्याति प्राप्त की। मैं अद्वितीय तैराक माना जाने लगा। इस कला ने मुझे एक विलक्षण मानव बना दिया। जब कभी उस कुएं के तट पर मैं बैठा दिखाई दे जाता ,तो लोग मान लेते कि पानी अब किसी भी चीज को हड़प नहीं कर सकेगा। फिर वह गगरी हो लोटा हो , अँगूठी हो , घड़ी हो ,चाहे कुछ भी हो। एक बार तो मैंने मोतियों की एक माला निकल दी थी और एक बार जब किसी स्त्री के गिरे हुए बुंदे पानी में से ला दिए ,मूगा गूँगा नाम मिट गया। अब मैं गूँगा तैराक कहलाने लगा।

1 .किस घटना ने गूँगे का नाम बदल दिया?

2 . 'एकटक देखने ' का आशय स्पष्ट कीजिए।

3 .गूँगे को तैराक बनने की प्रेरणा किसने दी?

4 . 'हेय ' का क्या अर्थ है ?

i) उच्च ii) निंदनीय, निम्न iii) वंदनीय iv)उपरोक्त सभी

5 .एक कक्षा में 30 बच्चे हैं , जिसमें से 12 बच्चे तैराकी करते हैं 10 बच्चे फुटबॉल खेलते हैं ,शेष टेनिस खेलते हैं। तो तैराकी और कुल बच्चों का अनुपात बताइए।

-ज्योति, प्रवक्ता, , राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ईस्माइलपुर, अंबाला खंड -1.

प्रतिमान - 13 (अपूर्व अनुभव आधारित)

हमारा समाज बच्चों की कार्यकुशलताओं के प्रति अनेक प्रकार की संकीर्णताओं का शिकार है। कुछ बच्चों को अपने व्यक्तिगत नजरिये के कारण प्रतिभावान मान लिया जाता है और कुछ बच्चों के बारे में यह घोषित कर दिया जाता है कि वह सीख ही नहीं सकता। जाति, सम्प्रदाय, भाषा, क्षेत्र, लिंग आदि के आधार पर बच्चों के साथ भेदभाव किया जाता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अनेक प्रकार की उपेक्षाओं व नकारात्मक दृष्टिकोण का सामना करना पड़ता है। आम लोगों के ही नहीं, परिजनों तक के हतोत्साहित करने वाले नामकरण व टिप्पणियां उनके आगे बढने के मार्ग में बाधा बन जाती हैं। विकलांग, अपंग, अपाहिज ही नहीं, ऐसे-ऐसे नामों से उन्हें पुकारा जाता है कि उनका हौंसला पहले ही पस्त हो जाता है। अज्ञानता व नकारात्मक सोच के कारण उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने की बजाय उनके आत्मबल को चूर.चूर कर दिया जाता है। आज हमें ऐसी शिक्षा की जरूरत है जो कि हर बच्चे को अवसरों व भागीदारी की समानता सुनिश्चित करे।

प्रश्नः.1 प्रस्तुत गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक चयन करें.

क . हमारा समाज ख. विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, शिक्षा और समाज

ग. आत्मविश्वास घ. सामाजिक असमानता

प्रश्नः.2 किन कारणों से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की कार्यकुशलता पर संदेह जताया जाता है?

प्रश्नः.3 विशेष आवश्यकता वाला विद्यार्थी दीपक अपना शब्द .भंडार बढ़ाने के लिए प्रतिदिन 10 नए शब्द सीखता है। फरवरी और मार्च 2020 के कुल दिनों में वह कितने नए शब्द सीख पाएगा, जिसमें रविवार के दिन उसकी शब्द सीखने की छुट्टी होती है।

प्रश्नः.4 व्हीलचेयर के सहारे चलने वाली अंकिता कक्षा में सबसे तेज गति से लिखती है। वह अपनी उत्तर पुस्तिका की एक पंक्ति लिखने में 30 सेकिंड का समय लेती है। उत्तरपुस्तिका के एक पृष्ठ की 17 पंक्तियां लिखने में वह कितना समय लगाएगी?

प्रश्नः.5 कौन से बच्चों को विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की श्रेणी में रखा जाता है?

- **अरुण कुमार कैहरबा प्रवक्ता. रा.उ.वि. करेड़ा खुर्द, जगाधरी, यमुनानगर**

प्रतिमान - 14 (अपूर्व अनुभव आधारित)

जिंदगी की वास्तविक समझ अनुभव से पैदा होती है। हमारे भीतर छुपी क्षमताओं व शक्तियों का बोध कराने के लिए भी अनुभव सहायक होता है। अनुभव पुस्तकों एवं शिक्षा द्वारा स्वयं किए गए संघर्षों द्वारा तथा समाज के अन्य अनुभवशाली इंसानों द्वारा समझाए जाने से प्राप्त किया जा सकता है। कई बार पुस्तकों का ज्ञान मनुष्य को वह सब कुछ नहीं सिखा पाता, जितना जीवन के संघर्ष और स्वयं किए जाने वाले कार्य द्वारा सीखा जा सकता है। यदि किसी व्यक्ति को कार या स्कूटर के बारे में पूरी जानकारी दे दी जाए, तब भी वह दक्षता व अनुभव के अभाव में कार या स्कूटर नहीं चला सकता। उसी प्रकार बच्चे अक्सर पेड़ पर चढ़ने का जोखिम उठाते हुए गिरने का, चोट लगने का, ऊपर चढ़ने का , सभी तरह के अनुभव प्राप्त करते हुए दक्षता प्राप्त कर लेते हैं। पहाड़ों में लोगों को छोटी. छोटी पगडंडियों पर बड़ी तेजी से चलने का अनुभव होता है। समतल से जाने वाले लोग पहाड़ों की पगडंडियों पर आसानी से नहीं चल सकते। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिन्होंने शारीरिक रूप से अक्षम होने पर भी कठोर परिश्रम व दृढ़ इच्छा शक्ति से असंभव कार्य को भी संभव कर विजय का अनुभव किया। डाकुओं द्वारा चलती ट्रेन से अरुणिमा सिन्हा को नीचे फैंके जाने पर उसने एक पांव खो दिया। परंतु 2013 में 8848 मीटर विश्व की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली विकलांग महिला बनने का गौरवशाली अनुभव प्राप्त किया। बचपन में ट्रेन- एक्सीडेंट में टांग खोदेने के बावजूद गिरीश शर्मा ने 'बैडमिंटन चैंपियन' बनने का अपूर्व अनुभव किया। नकली पैर होने के बावजूद

‘सुधाचंद्रन’ ने सफल ‘नर्तकी’ बनकर सिद्ध कर दिया कि पंखों से नहीं, हौसलों से उड़ान होती है।

1. हिमालय की सबसे ऊंची चोटी कौन सी है?

क. सागर माथा

ख. माउंट एवरेस्ट

ग. कैलाश श्रेणी

घ. कंचनजंगा

2. निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय व उपसर्ग छांटकर लिखें-

क. वास्तविक ख. अनुभव

ग. असंभव घ. गौरवशाली

3. आप जीवन में किस प्रकार सफलता प्राप्त कर सकते हो-

क. दृढ़ इच्छा शक्ति द्वारा

ख. बुद्धि का उपयोग करके

ग. कठोर परिश्रम द्वारा

घ. उपरोक्त सभी

4. अरुणिमा सिन्हा ने प्रति घंटा की रफ्तार से 4000 मीटर की दूरी तय की। 20 घंटे में उसने कितनी कि.मी. दूरी तय की?

क. 50 ख. 40

ग. 80 घ. 60

5. पहाड़ पर चढ़ते समय सांस लेने में कठिनाई अनुभव होती है क्योंकि-

क. शारीरिक श्रम लगता है।

ख. कार्बनडाइऑक्साइड की कमी होती है।

ग. ऊर्जा की कमी हो जाती है।

घ. ऑक्सीजन की कमी होती है।

- गायत्री मल्होत्रा राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जगाधरी ,यमुनानगर

प्रतिमान - 15 (अपूर्व अनुभव आधारित)

आज हम उन कामयाब लोगों की बात करेंगे, जिन्होंने अपनी विकलांगता को अपनी ताकत बना लिया। जिन्होंने साबित कर दिया कि इंसान अपनी सोच से विकलांग होता है। अगर इंसान की सोच बड़ी है तो विकलांग व्यक्ति भी वह कर सकता है, जो हाथ पैरों वाला व्यक्ति भी नहीं कर सकता। दुनिया के सफलता प्राप्त करने वाले व्यक्ति जो किसी न किसी रूप में विकलांग थे, उनका मानना है, विकलांगता सिर्फ एक सोच है। अगर व्यक्ति के इरादे मजबूत हैं तो कोई भी ऐसी क्षेत्र नहीं, जहां विकलांग व्यक्ति कामयाब न हो। आज हम ऐसे ही बड़ी सोच वाले दुनिया के सफल लोगों की बात करेंगे जो हमेशा प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणा स्रोत हैं -

1.निकोलस गेम्सः-निकोलस गेम्स आस्ट्रेलिया के एक मोटिवेशन स्पीकर है। जन्म से ही उनके दोनों हाथ पैर नहीं थे। इसके चलते स्कूल में सारे लोग उनका मजाक उड़ाते थे और उनका मनोबल तोड़ते थे। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और खुद ही काम करना शुरू कर दिया। वित्तीय योजना में विशेषज्ञता के साथ वाणिज्य में स्नातक हुए। उनकी हिम्मत और अद्भुत साहस की वजह से उन्होंने आस्ट्रेलिया में अवार्ड भी जीता।

2-अरुणिमा सिन्हाः-भारत के उत्तरप्रदेश के पूर्व राष्ट्रीय स्तर की वॉलीबॉल खिलाड़ी अरुणिमा सिन्हा ने 2011 की बड़ी दुर्घटना में अपना एक पैर खो दिया। लुटेरों द्वारा उनकी चैन छीनने के विरोध करने पर उन्होंने उसे चलती ट्रेन के आगे धक्का दे दिया। जिससे वह गुजरती ट्रेन की चपेट में आकर बुरी तरह से घायल हो गई। वह ऐसा समय था, जब सभी उन्हें लाचार और बेबस समझ रहे थे। वह नहीं चाहती थी कि लोग उन पर दया करें। तब उन्होंने अपनी सकारात्मक दृष्टि से अपनी कमजोरी को अपनी ताकत में बदल दिया। अरुणिमा सिन्हा माउंटएवरेस्ट पर चढ़ने वाली दुनिया की सबसे पहली विकलांग महिला बन गई।

3-स्टीफन हॉकिंस:-स्टीफन हॉकिंस प्रतिभाशाली दिमाग वाले एक विश्व प्रसिद्ध भौतिकी वैज्ञानिक और लेखक थे। उन्होंने कठिनाइयों से भरे जीवन को जीते हुए भी अपने वैज्ञानिक बनने के सपने को पूरा किया और विज्ञान के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया।

प्रश्न 1. जिंदगी में जोखिम उठाने का अवसर आने पर हमें क्या करना चाहिए?

(क) जोखिम उठाने में बुराई है

(ख) गलत जोखिम गलत समय पर लेना चाहिए

(ग) जोखिम के परिणाम घातक है

(घ) सही समय पर जोखिम ले लेना चाहिए

प्रश्न 2. क्या विकलांगता होने पर हमें अपने कार्यों के लिए हमेशा दूसरों पर निर्भर रहना चाहिए ?

प्रश्न 3.अक्षम व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है। क्या इनके लिए भी शिक्षा की सुविधा होनी चाहिए?

प्रश्न 4. दिव्यांग जनों के लिए कौन सी ऐप बनाई गई है?

क. दिव्यांग सारथी   ख. शिक्षा सारथी   ग. सारथी   घ. इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 5 एक कक्षा में 700 विद्यार्थी हैं। जिसमें से शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों की संख्या 105 है। शारीरिक रूप से ठीक बच्चों की संख्या कितने % होगी ?

क. 80   ख.39   ग. 85   घ. 15

- रजनी, बी0 आर0 पी0 हिन्दी, सरस्वती नगर, यमुनानगर

प्रतिमान - 16 (अपूर्व अनुभव आधारित पद्यांश)

जिंदगी भर याद रहता है,
मुश्किल में साथ देने वाला
और मुश्किल में साथ छोड़ने वाला
समर्पणभा वही रखता अनुभव की नींव
'अनुमान' गलत हो सकता है पर,।
'अनुभव' गलत नहीं होता क्योंकि
'अनुमान' हमारे मन की कल्पना है
और अनुभव हमारे जीवन की सीख।

उपर्युक्त पद्यांश के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. कोशिशों से ही सफलता संभव है। वाक्यांश पर अपने विचार रखिए?
2. "समर्पण भाव" से क्या अभिप्राय है। 20 -30 शब्दों में स्पष्ट कीजिए ।
3. अनुमान एवं अनुभव में से कि से महत्वपूर्ण मानते हैं और क्यों ?
4. मेरी और मेरे मित्र की 5 वर्ष पहले आयु का अनुपात 17:19 था। 6 वर्ष बाद हमारी आयु का अनुपात 14:15 होजाएगा। वर्तमान में मेरे मित्र की आयु क्या है ?

   A. 24 वर्ष B. 22 वर्ष C. 23 वर्ष D. 25 वर्ष
5. आपने अपने मित्र से 65000 रुपए उधार लिए 3 वर्ष बाद 85475 रुपए कुल धन देकर उधार चुकता किया। साधारण ब्याज की दर ज्ञात कीजिए ।

   A. 10% B. 10.5% C. 12% D. 11.5%

-संदीप कुमार, बी0 आर0 पी0 (हिन्दी) **ब्लॉक -कथूरा, सोनीपत**

प्रतिमान - 17 (अपूर्व अनुभव आधारित)

निर्मला को अपनी सहेलियों में सयाल लहनु भाई भोया बहुत बुरी लगती थी। सयाल के पिता का नाम लहनु भाई भोया था, सयाल के व्यवहार और गुणों की सभी तारीफ करते थे। निर्मला भला सयाल की तारीफ कैसे सह पाती। लोग सयाल की माँ से कहते कलगी बेन, तुम्हारी लड़की बड़ी होनहार है। सयाल गरीब परिवार से संबंध रखती थी, उसके कपड़ों से उसकी गरीबी झलकती थी। निर्मला के पास अच्छे कपड़े, चूड़ियां व लाल मोती लगी एकमाला थी। सयाल को स्कूल जाना अच्छा लगता था और निर्मला हरदम इसमौ के की ताक में रहती थी कि स्कूल छोड़कर खेतों में जाने को मिल जाए। एक दिन निर्मला की माँ ने उसे मवेशियों को चराने के लिए जंगल में जाने को कहां क्योंकि उन्हें चराने ले जाने वाला कोई नहीं था। निर्मला खुशी से उछल पड़ी और मवेशियों को हांकते हुए गाँव के धूल भरे रास्ते पर चल पड़ी। रास्ते में सयाल की एक दोस्त निर्मला को मिली उसने पूछा आज मवेशी लेकर किधर जा रही हो? घाटी की तरफ क्यों नहीं जाती। सयाल भी तो अपने मवेशी लेकर उधर ही गई है। कुछ दूर चलने के बाद निर्मला ने घाटी की ओर जाने वाली पगडंडी छोड़ दी और जंगल की ओर मुड़ गई। वहां कुछ दूरी पर थोड़ी सी खुली हुई जगह थी, जहां मवेशी आराम से चराए जा सकते थे। जब वह खुली हुई जगह पर पहुंची तो बड़ी जोर से गुस्सा होकर बड़बड़ाई। कारण यह था कि जिस बरगद के पेड़ पर उसका अड्डा था उसके तने पर पीठ टिकाकर सयाल आराम कर रही थी। गायों की घंटियों की आवाज सुनकर उसने इधर - उधर देखा। निर्मला को देखकर वह बहुत खुश हुई और हाथ हिलाकर उसे बुलाने लगी, लेकिन निर्मला ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। वह सयाल से दूर रहना चाहती थी। उसके मवेशी नरम घास खोजने के लिए बिखर गए। जंगल में गर्मीऔर उमस थी। अचानक उसने एक झाड़ी देखी जिसकी छाया में वह बैठ सकती थी। निर्मला जैसे ही झाड़ी के पास जाकर बैठी उसे पीछे से फुंकार सुनाई पड़ी। उसने मुड़कर देखा एक दैत्याकर अजगर उसकी और जलती आँखों से घूर रहा था। वह 12 फीट से भी ज्यादा लंबा था। वह इतना नजदीक था कि निर्मला वहां से भागने का साहस न कर सकी। घबराहट के कारण उसकी आवाज भी नहीं निकल रही थी। अचानक उस अजगर ने निर्मला पर हमला कर दिया। उसका घुटना अब उसकी कुंडली में फंस चुका था। सांप की पकड़ इतनी सखत थी कि निर्मला को लगा कि उसकी हड्डियां चूर -चूर हो जाएंगी। दर्द के मारे निर्मला चीखने लगी। वह मदद के लिए बचाओ - बचाओ पुकारने लगी। सांप एक बार फिर कुंडली मारने वाला था कि अचानक उस पर किसी ने लाठी से हमला किया। यह हमला सयाल ने किया। लाठी से काम नहीं बन रहा था। इसलिए सयाल ने अपने हाथों से उस अजगर का मुंह पकड़ा और उसके

जबड़े खोलने लगी। आखिर दोनों लड़कियों ने जोर लगाया तो कुंडली का दबाव कम हुआ। फिर एक बार इतनी जोर से झटका दिया कि निर्मला सांप की कुंडली से छूटकर दूर जा गिरी। लेकिन अब अजगर ने सयाल पर हमलाकर दिया। बहुत भयानक दृश्य था। सांप सयाल को निगलना चाहता था। तभी उसने देखा सयाल में अद्भुत शक्ति आ गयी। उसने सांप को झटककर दूर फैक दिया और दोनों लड़कियाँ बिजली की तरह भागने लगी। वेत भीरु की जब वहां पहुंच गई जहां मवेशी शांति से चर रहे थे और कोई खतरा न था। अचानक निर्मला की आंखों से आंसू बहने लगे और वह सयाल से बोली - अगर आज तू ना होती तो वह मुझे मार डालता। मैं तुम्हें पहचान नहीं पाई। यह कहकर निर्मला ने शर्म से अपना सिर झुका लिया।

प्रश्न 1 निर्मला को अपनी सहेलियों में सबसे बुरी कौन लगती थी और क्यों?

प्रश्न2 निर्मला की माँ ने उसे जंगल में मवेशी चराने के लिए क्यों भेजा?

प्रश्न3 जंगल में कौन से पेड़ पर निर्मला का अड्डा था?

प्रश्न4 अजगर की लंबाई कितने फीट थी?

प्रश्न5 किसी वस्तु पर 15% की छूट देने के बाद उसे 2550 रुपए में बेचा जाता है उसका अंकित मूल्य क्या होगा?

क- 3200 रुपए ख- 3000 रुपए ग - 2900 रुपए घ - 3700 रुपए

- **सत्यबीर राणा, प्रवक्ता, रा. व. मा. वि. जाखोली,राई, सोनीपत**

प्रतिमान-18 (अपूर्व अनुभव आधारित)

गीता ने लगभग भागते हुए विद्यालय में प्रवेश किया। जब तक वह कक्षा- कक्ष तक पहुंचती, तब तक श्रीमती श्रीवास्तव सबकी हाजरी ले चुकने के बाद रजिस्टर को बंदकर चुकी थी। अध्यापिका ने गीता को डांटते हुए कहा कि - "तुम आज फिर देरी से आई हो। " गीता ने आंखें नीचीकर के अंगूठे से फर्श को कुरेदते हुए कोई जवाब नहीं दिया और चुपचाप डांट खाती रही। श्रीमती श्रीवास्तव ने हारकर उसे चेतावनी देते हुए कक्षा में प्रवेश करने की इजाजत दे दी । गीता डांट खाकर थोडा निराश होते हुए अंतिम बेंच पर जाकर बैठ गई और कक्षा के अन्य बच्चों की हंसी उसका पीछा करती रही। गीता 12 वर्ष की एक अबोध बालिका थी और विद्यालय में देरी से आना पिछले कई दिनों से उसकी आदत में शुमार हो गया था। एक दिन श्रीमती श्रीवास्तव अचानक मेहमानों के आ जाने के कारण थोड़ी देरी से विद्यालय के लिए घर से निकली। विद्यालय से थोडा पहले ही वह ऑटो से देखती है कि एक बच्ची किसी अंधे वृद्ध को सड़क पार करवा रही है । नजदीक आने पर उन्होंने देखा कि यह तो अपनी गीता है। श्रीमती श्रीवास्तव कार्यालय से रजिस्टर लेकर कक्षा में पहुंची। थोड़ी देर बाद ही गीता ने डरते हुए कक्षा में प्रवेश करने की इजाजत मांगी। श्रीमतीश्री वास्तव ने मुस्कुराकर उसका स्वागत किया उसे पास बुलाकर शाबाशी दी।

उपयुक्त गद्यांश के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

प्रश्न 1 : गीता का स्कूल उसके घर से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर है। यदि वह 100 मीटर प्रतिमिनट की गति से चलती है और वह सुबह 7:05 पर घर से निकलती है , तो वह अपने स्कूल किस समय पहुंचेगी।

प्रश्न 2 : यदि आपको बाजार में सड़क पर कोई अपंग व्यक्ति मिलता है तो आप उसकी मदद कैसे करोगे?

प्रश्न 3 : गीता की कक्षा में 30 बच्चे हैं, जिनमें से 20 लड़के और 10 लड़कियां हैं। यदि प्रत्येक लड़के के पास 12 कॉपियां और प्रत्येक लड़की के पास 14 कॉपियां हो तो कक्षा में सभी बच्चों के पास कुल कितनी कॉपियां है।

प्रश्न 4 : गीता ने श्रीमती श्रीवास्तव को देर से आने के विषय में कुछ नहीं बताया और चुप रही। आप अपनी समझ के आधार पर बताइए उसने ऐसा क्यों किया?

प्रश्न 5 : गद्यांश में विदेशी भाषा के कोई तीन शब्द छाँटते हुए उनका हिंदी अर्थ लिखिए।

- **राकेश कुमार, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बीसवामिल,सोनीपत**

प्रतिमान-19 ('रहीम के दोहे' पर आधारित गद्यांश)

सच्चा ज्ञानी वही होता है, जो मनुष्य को कुमति से हटाकर सुमति की ओर अग्रसर करे। वह स्वयं के लिए संपत्ति नहीं जोड़ता, बल्कि उसकी सारी संपत्ति दीन -दुखियों एवं असहायों के लिए ही खर्च होती है। दूसरों की भलाई करना ही वह अपना परम धर्म समझता है, जबकि अज्ञानी मनुष्य केवल अपनी चिंता में ही लीन रहता है। वह अपने स्वार्थ के लिए किसी भी प्राणी का अहितकर सकता है। आजकल अज्ञानियों द्वारा प्रकृति का अत्यधिक दोहन मनुष्य के लिए काफी हानिकारक सिद्ध हो रहा है। संसार में सभी पशु-पक्षियों, कीट-पतंगों आदि को मनुष्य के समान ही जीने का अधिकार है, परंतु मनुष्य की घोर स्वार्थ वृत्ति ने प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ दिया है। परिणाम स्वरूप आज विश्व कोरोना जैसी महामारी के पाश में फँस गया है। अतः हमें प्रकृति के संतुलन का ध्यान रखते हुए उससे प्रेरणा लेकर प्रत्येक जीव के कल्याण के विषय में सोचना चाहिए तथा असहायों, जरूरतमंदों की हमेशा सहायता करनी चाहिए। ऐसा करके ही मनुष्य का जीवन सार्थक सिद्ध हो सकता है।

प्रश्न 1. ज्ञानी मनुष्य स्वयं के लिए संपत्ति क्यों नहीं जोड़ते?

प्रश्न 2. सुमति की ओर अग्रसर ज्ञानी व्यक्ति किन से विमुख रहता है ?

(क) विकृतियों से (ख) परोपकार से (ग) सच बोलने से (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 3. दूसरों की भलाई को ही परमधर्म क्यों माना गया है?

प्रश्न 4. प्रकृति का अत्यधिक दोहन करना मनुष्य के लिए हानिकारक सिद्ध होता है, क्यों ? उदाहरण सहित समझाइए।

प्रश्न 5. एक व्यक्ति अपने वेतनमान में से 7000 रूपये प्रतिमाह भविष्य निधि में जमा करता है तो बताइए 20 वर्ष बाद उसके पास कितने रुपए जमा हो जाएँगे ?

- डॉ. महेंद्रसिंह, **बी0 आर0 पी0 हिन्दी,** बौन्दकलां

प्रतिमान - 20 ('रहीम के दोहे' पर आधारित गद्यांश)

लला बंसीलाल हर समय दुखी रहते। बार – बार उन्हें पिछले दिन याद आने लगते ।असल में दोष उनका भी था। अच्छी भली किरयाने की दुकान चल रही थी। उन्होंने जल्दी अमीर बनने के चक्कर में चावल के व्यापार में हाथ आजमाने की सोची। उनके लिए यह काम बिल्कुल नया था। लेने के देने पड़ गये। हाथ में जो पूंजी थी, वो गयी सो गयी ऊपर से कर्जा भी चढ़ गया। कितने ही रिश्तेदारों तथा मित्रों की उन्होंने बुरे वक्त में सहायता की थी। अब उन्हें जरूरत पड़ने पर सभी कोई न कोई बहाना बनाकर मदद करने के लिए मना कर देते। एक दिन वो किसी काम से अपने गाँव में गये हुए थे। उन्हें अपने हिन्दी अध्यापक चिंतामणि दिखाई पड़े। लाला बंसीलाल उनके प्रिय छात्रों में से एक थे। उन्होंने लाला बंसीलाल के उदास चेहरे को देखकर परेशानी का कारण पूछा लाला बंसीलाल पहले तो थोड़े झिझके पर बाद में उन्होंने सारी बात बता दी।चिंतामणि जी ने पहले तो उन्हें रहीम का एक दोहा सुनाया–

थोथे बादल बवार के,ज्यों रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भए,करे पाछिली बात ।।

फिर उन्होंने लाला बंसीलाल को समझाया कि पिछली बातों को याद करके दुखी होने का कोई लाभ नहीं है। धीरे– धीरे अपना कर्ज उतारो और काम धंधे में मन लगाओ। सब ठीक हो जाएगा।

प्रश्न 1–कोइ ̒नया व्यापार शुरू करने से पहले व्यक्ति को क्या करना चाहिए ?

प्रश्न 2– स्वार्थी मित्र की क्या पहचान होती है?

प्रश्न 3 – पिछली बातों को बार –बार याद करने से क्या होता है?

प्रश्न 4 – एक वर्गाकार दुकान की लंबाई 10 मीटर है। उसका क्षेत्रफल क्या होगा?

1– 10वर्ग मी 2– 200 वर्ग मी 3– 100वर्ग मी 4– 50वर्ग मी

प्रश्न 5– एक दुकानदार ने 30 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से 1 टन चावल खरीदा चावल का कुल मूल्य क्या होगा?

1– 3000 रुपये 2– 30000 रुपये 3– 300000रुपये 4– 3000000 रुपये

- दीपक राविश (पीजीटी हिन्दी) रा उ वि नंदकरण माजरा ,कैथल

प्रतिमान-21 ('रहीम के दोहे' पर आधारित गद्यांश)

बरगद के पेड़ को हिन्दू धर्म मे पवित्र वृक्ष माना गया है। ऐसा ही एक बरगद का पेड़ सुन्दर नगर गांव में था। वहाँ स्त्री हो या पुरुष – त्यौहारो पर उसकी पूजा करते थे । समय बीतता गया और पेड़ की आयु बढ़ती गई। काफी वर्षों बाद बरगद का पेड़ पुराना हो गया तो उसकी डालियाँ सूखने लगी और टूटकर बिखरने लगी। बरगद के पेड़ की हालत को देखते हुए सुन्दर नगर गांव में पंचायत बिठाई गई और तय किया गया कि पेड़ को काट दिया जाए तथा लकड़ियों को घरेलू उपयोग में लाया जाए। पंचायत ने इस बात पर सहमति दे दी। अगले दिन सुबह से ही गांव वाले बरगद के पेड़ को काटने के लिए कुल्हाड़ी लेकर पहुँचे। बरगद के पेड़ के नजदीक ही एक पीपल का पेड़ था। वह पीपल का वृक्ष बोला – मान्यवर ! क्या आपको क्रोध नहीं आ रहा है ? ये मनुष्य कितना स्वार्थी है। जब आपकी आवश्यकता थी तो ये सभी आपको पूजते थे और जब आप बूढ़े हो गए हो तो ये आपका अंत कर रहे है। बरगद के पेड़ ने कहा–नहीं दोस्त! मै प्रसन्न हूँ कि मरने के बाद भी इनके काम आ सकूंगा। परोपकार करना हमारे जीवन का पहला उद्देश्य होना चाहिए।पेड़ परोपकार के लिए लकड़ी और फल देते है।नदी परोपकार के लिए जल देती है। यानी प्रकृति के पंचतत्व परोपकार करते है। इसलिए मनुष्य को भी परोपकार करना चाहिए।

प्रश्न 1–इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

प्रश्न 2–हमे जीवन में कौन सी भावना महान बनाती है?

प्रश्न 3– परोपकार का अर्थ है ?

क–दूसरों से दुश्मनी करना ख–दूसरों की भलाई करना

ग–दूसरों से घृणा करना घ–इनमे से कोई नहीं

प्रश्न 4– आज हम किस लालसा के वशीभूत होकर जीवन व्यतीत कर रहे है?

क–धन कमाने की ख–मशहूर होने की

ग–अपने को **कम** महत्व देने की घ–इनमे से कोई नहीं

प्रश्न 5 : यदि एक पेड़ एक वर्ष में 17000 रूपए मूल्य की आक्सीजन प्रदान करता है तो एक बगीचे में लगे 60 वृक्ष कितने मूल्य की आक्सीजन प्रदान करेंगे ।

- **संतोष , राजकीय उच्च विद्यालय पंचतीरर्थी ,सरस्वती नगर, यमुनानगर**

प्रतिमान - 2 2 ('कंचा' पर आधारित गद्यांश)

दुकान पर सफेद गुड रखा था ,जो दुर्लभ था । उसे देख कर राहुल के मुंह में पानी आ जाता था ।आते -जाते वह ललचाई नजरों से गुड़ की ओर देखता था , फिर मन मसोस कर रह जाता था । आखिरकार उसने हिम्मत की और घर जाकर मां से कहा। मां बैठी फटे कपड़े सिल रही थी । उसने आंख उठा कर कुछ देर दीन दृष्टि से उसकी ओर देखा , फिर ऊपर आसमान की ओर देखने लगी और बड़ी देर तक तक देखती रही , बोली कुछ नहीं । वह चुपचाप मां के पास से चला गया। जब मां के पास पैसे नहीं होते थे तो वह इसी तरह देखती थी। वह जानता था । वह बहुत देर गुमसुम बैठा रहा , उसे अपने वे साथी याद आ रहे थे ,जो उसे चिढ़ा-चिढ़ा कर गुड़ खाते थे । ज्यों ज्यों उसे उनकी याद आती, उसके भीतर गुड़ खाने की लालसा और तेज होती जाती।एकाध बार उसके मन में मां के बटुए से पैसे चुराने का भी ख्याल आया । ऐसा ख्याल आते ही वह अपने आप को धिक्कारने लगा और ईश्वर से क्षमा मांगने लगा । उसकी उम्र 11 साल की थी। घर पर मां के सिवा कोई नहीं था । परंतु मां कहती थीकि वे अकेले नहीं है , उनके साथ ईश्वर है। वह मां की हर बात मानता था ,इसलिए उसकी यह बात भी मान लेता था । ईश्वर का ख्याल आते ही उसके मन में विचार आया कि ईश्वर सब कुछ कर सकता है तो क्या वह मुझे थोड़ा सा गुड़ नहीं दिला सकता । वह उठा और घर के एक कोने में पूजा करने बैठ गया।तभी माँ ने आवाज लगाई- बेटा पूजा से उठने के बाद बाजार से नमक ले आना । उसने ध्यान लगाकर पूजा की। फिर पैसे और झोला लेकर बाजार की ओर चल दिया । उस समय शाम हो गई थी, सूरज डूब रहा था , वह खेतों के रास्ते से बाजार की तरफ जा रहा था। अचानक उसके पैर ठिठक गए और आंखें पूरी बंद हो गई , अंधेरे में एक अठन्नी दमक रही थी। उसने अठन्नी को उठाकर निहारा , चूमा और माथे से लगाया, क्योंकि वह एक अठन्नी ही नहीं थी ,उस गरीब पर ईश्वर की कृपा थी । वह बाजार की तरफ दौड़ पड़ा ,अठन्नी उसने जोर से हथेली में दबा रखी थी। वह दुकान पर जा पहुंचा।पंसारी ने पूछा- क्या चाहिए ? उसने हथेली में चमकती अठन्नी देखी और बोला -आठ आने का सफेद गुड़ । यह कहकर उसने गर्व से अठन्नी पंसारी की तरफ गद्दी पर फैंकी , पर यह गद्दी पर न गिरकर उसके सामने रखे धनिए के डिब्बे में गिर गई ।

पंसारी ने उस डिब्बे में टटोला, परंतु उसे अठन्नी नहीं मिली। उस डिब्बे में एक चिकना पत्थर जरूर था जिसे पंसारी ने निकाल कर फेंक दिया । उसका चेहरा एकदम काला पड़ गया , सिर घूम गया ,जैसे शरीर का खून निकल गया हो। आंखें छलछला आई । पंसारी ने हैरत से कहा- कहां गई अठन्नी ? उसे लगा जैसे वह रो पड़ेगा । देखते-देखते ही उसके सपनों की मौत हो गई थी , उसने मरे हाथों से जेब से पैसे निकाले , नमक लिया और जाने लगा । दुकानदार ने उसे उदास देखकर कहा - गुड़ ले लो, पैसे फिर आ जाएंगे ।नहीं... उसने कहा और रो पड़ा। मन में सोच रहा थाकि मैंने तो ईश्वर से गुड़ मांगा था , दुकानदार से नहीं ।

प्र०1- पंसारी से क्या अभिप्राय है ?

प्र०2- मां के पास जब पैसे नहीं होते थेए तो वह ऊपर आसमान की तरफ क्यों देखती थी?

प्र०3- राहुल अपने आप को किस बुरे विचार के कारण धिक्कारने लगता है?

प्र०4- एक रुपए में कितने आने होते हैं?

प्र०5- आपने एक दुकान से 12 किलो गुड़ 37 रुपए प्रति किलो की दर से खरीदा आपने दुकानदार को 500 सौ रुपये का नोट दिया , तो बताओ दुकानदार ने आपको कितने रुपए वापस दिए?

- **सुभाष चंद्र, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कुत्ताबगढ, सिरसा**

प्रतिमान-23 ('कंचा' पर आधारित गद्यांश)

मास्टर जी बीच -बीच में बैत से मेज ठोकते हुए ऊंची आवाज में कह रहे थे -"बच्चो ! आपमें से कई ने रेलगाड़ी देखी होगी |उस गाड़ी को भाप की गाड़ी भी कहते हैं क्योंकि उस का यंत्र भाप की शक्ति से ही चलता है। भाप का मतलब पानी से निकलती भाप से है। तुम लोगों के घरों के चूल्हे में भी ....।" अप्पू ने भी सोचा -रेलगाड़ी !उसने रेलगाड़ी देखी है। छुक- छुक करती है। ...यही रेलगाड़ी है वह वह भाप की गाड़ी का मतलब ....। मास्टरजी की आवाज अब कम ऊँची थी। वह रेलगाड़ी के हर हिस्से के बारे में समझा रहे थे। "पानी रखने के लिए एक खास जगह है। इसे अंग्रेजी में बायलर कहते हैं। यह लोहे का बड़ा पी पा होता है।"

रेल परिवहन एक ज़रिया है जिसमें यात्रियों और माल को पटरियों पर चलने वाले वाहनों पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है। देश में बड़े -बड़े सामानों के आन्तरिक परिवहन तथा यात्रियों के संचालन में रेलपरिवहन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। देश की रेलों ने सुदूर क्षेत्रों में बसे लोगों तथा वहाँ मिलने वाले संसाधनों एवं तैयार वस्तुओं को सम्पूर्ण देश में पहुंचाया है। व्यापार -व्यवसाय ,देशाटन ,तीर्थयात्रा आदि का अवसर सुलभ कराने वाले साधनों की दृष्टि से रेलें देश की जीवन रेखा है।

प्रश्न 1. रेलगाड़ी व बस में क्या – क्या असमानताएं होती है ?

प्रश्न 2.परिवहन के पांच साधनों के नाम बताएं ?

प्रश्न 3.भारतीय रेल को देश की जीवन रेखा क्यों कहा गया है?

प्रश्न4 .मोहन 10 किलोमीटर की दूरी 3 घंटे में तय करता है तो बताओ 5 घंटे में मोहन कितने किलोमीटर की दूरी तय करेगा?

प्रश्न 5 .कौन सा पदार्थ प्रकृति में तीन अवस्थाओं ठोस, द्रव और गैस में पाया जाता है ?

- **मंजू ,बी0 आर0 पी0 हिन्दी, ब्लॉक ऐलनाबाद सिरसा**

प्रतिमान-24 ('कंचा' पर आधारित गद्यांश)

छोटी -छोटीबातें

जो सुख वैभव के बस संगी,
सुनो वे सच्चे मीत नहीं।
संकट में जो साथ निभाए ,
जग में सच्ची प्रीत वही।

मूल दुखों का मोहमाया है ,
जग है जिसमें फंसा हुआ।
जिसने त्यागा वो ही उभरा,
उसका हरदम भला हुआ

प्रिय! प्रकृति के अवयव देखो ,
परहित की खातिर हैं जीते।
अपने फल कब चखते तरुवर,
और ताल कब पानी पीते।

नष्ट हो चुका जो सुख - वैभव ,
कहां काम वह फिर आता।
भुला के पिछली सारी बातें ,
जोड़ो वर्तमान से नाता।

धरती माता जैसे सहती ,
सरदी, गरमी और बरसात।
तुम भी मत घबराना प्रियवर,
सुख दुख सहलेगा यह गात।

हित जग का है छिपा हुआ,
इन छोटी-छोटी बातों में।
''समता ' सुनो सुरक्षित होगा,
भविष्य तुम्हारे हाथों में।

1. सच्ची मित्रता की कसौटी क्या होती है ?

2. प्रकृति के और कौन - कौन से अवयव हैं जो परोपकार के लिए जीते हैं?

3 . सरदी , गरमी और बरसात की ऋतुएं कौन - कौन से भारतीय (देसी) महीनों में आती हैं?

4. रामलाल 1 दिन छाता खरीदने के लिए बाजार गया। उसने अपने लिए 700 रूपये में एक छाता खरीदा। उसने अपने दोनों बच्चों के लिए भी दो छोटे - छोटे छाते 400 रूपये प्रति छाता के हिसाब से खरीदे। दुकानदार ने नकद भुगतान करने पर उसे 5% की छूट दी। बताइए रामलाल ने छातों की कुल कितनी कीमत चुकाई।

5. रामकली ने सब्जी मंडी से फलों का एक टोकरा खरीदा। टोकरे में 5 किलोग्राम अनार , 2 किलोग्राम संतरे तथा 3 किलोग्राम पपीते थे। उसने दुकानदार को फलों का यह टोकरा खरीदने के लिए 800 रूपये की राशि चुकाई। पपीते 40 रूपये प्रतिकिलोग्राम तथा संतरे 50 रूपये प्रतिकिलोग्राम के भाव से खरीदें। बताइए उसने अनार किस भाव से खरीदें ?

- **समता यादव, टी0 जी0 टी0 हिन्दी, रा0 उ0 वि0 लाला, जाटूसाना, रेवाड़ी**

प्रतिमान - 25 ('कंचा' पर आधारित गद्यांश)

कंचे का खेल भी कितना अद्भुत खेल था, खेलते हुए न सर्दी का अहसास और न गर्मी का। स्कूल से छुट्टी हो तो पूरा दिन भी कंचे खेलते बिता देते थे हम ।कांच के रंग-बिरंगे खूबसूरत से दिखने वाले कंचों को हम किसी दौलत की तरह संभालकर रखते थे। मैं तो अपने सदियों पुराने पूर्वजों की तरह ही अपने कंचों को किसी पेड़ के पास निशानी के तौर पर धरती में दबाकर रखता था। कंचे खेलने के बहुत से तरीके थे, लेकिन हमारे यहाँ दो तरीके ज्यादा प्रचलन में थे। पहला जिसमें खिलाड़ी धरती पर बैठे-बैठे खेलते थे, जिसमें एक खिलाड़ी अपने एक हाथ के अंगूठे और उसके साथ वाली उंगली से कंचे को दूसरे हाथ की उंगली के ऊपरी सिरे पर लगाकर दूसरे खिलाड़ी के कंचे पर निशाना साधता था, निशाना लग जाने पर खिलाड़ी को उसी तरीके से पास में खोदे गए छोटे से गड्ढे में कंचे को डालना होता था, ऐसा करने वाले खिलाड़ी को दूसरे खिलाड़ी, जिसके कंचे को निशाना लगता था उससे एक कंचा जीत के रूप में मिलता है। निशाना न लगने की सूरत में दूसरे खिलाड़ी का क्रम आ जाता था। दूसरे तरीके के मुताबिक खिलाड़ी धरती में एक छोटा सा गड्ढा खोद लेते थे पहले तरीके जैसा ही और उससे थोड़ी दूरी पर एक लाईन खींच लेते थे, जहां पर खड़े होकर कंचे गड्ढे की तरफ फेंकने होते थे।

सबसे पहले खेलने का क्रम निर्धारित करने के लिए सभी खिलाड़ी अपना एक -एक कंचा लाईन पर खड़े होकर गड्ढे की तरफ फेंकते थे, गड्ढे से कंचे की दूरी के हिसाब से पहला, दूसरा, तीसरा आदि क्रम निर्धारित होता था। गड्डे के अंदर कंचा डालने वाले खिलाड़ी का क्रम बाहर वाले से उच्च होता था। लेकिन अगर गड्ढे में एक से ज्यादा खिलाड़ी कंचा डाल देते थे तो पहले उनका क्रम निर्धारित होता था, उनके क्रम निर्धारण में गड्ढे में बाद में कंचा डालने वाले खिलाड़ी का क्रम गड्ढे में उससे पहले कंचा डालने वाले खिलाड़ी से उच्च माना जाता था। उदाहरण के तौर पर अगर पाँच खिलाड़ी खेल रहे हैं, उनमें से तीन खिलाड़ियों के कंचे गड्ढे में चले जाते हैं और चौथे और पांचवें खिलाड़ी के कंचे गड्ढे से क्रमश :दो और चार फूट की दूरी पर रुक जाते हैं, तो खेल में चौथा क्रम दो फूट दूरी वाले खिलाड़ी का और पाँचवा क्रम चार फूट दूरी वाले खिलाड़ी का होगा। पहले तीन क्रम निकालने के लिए गड्ढे में तीसरे नंबर पर कंचा डालने वाले खिलाड़ी का क्रम में पहला स्थान, दूसरे नंबर पर कंचा डालने वाले का दूसरा स्थान और सबसे पहले गड्ढे में कंचा डालने वाले का तीसरा स्थान होगा। क्रम निर्धारण के उपरांत पहले खिलाड़ी को बाकी सभी खिलाड़ी एक निश्चित संख्या में दो -दो, तीन -तीन ,चार-चार आदि कंचे देते थे , फिर वह पहला खिलाड़ी लाईन पर खड़ा होकर उन सभी कंचों को गड्ढे की तरफ फेंकता था, कुछ कंचे गड्ढे में चले जाते थे और कुछ

उसके बाहर। अब दूसरे नंबर वाला खिलाड़ी एक कंचे की तरफ इशारा करते हुए पहले खिलाड़ी को उसे निशाना लगाने के लिए कहता था, पहला खिलाड़ी निशाना लगाता था। निशाना लग जाने पर सभी कंचे पहले खिलाड़ी को मिल जाते थे और खेल फिर से शुरू हो जाता था, और अगर निशाना चूक गया तो गड्ढे में आए कंचे पहले खिलाड़ी के हो जाते और बाकी बचे कंचों से अगला खिलाड़ी अपनी बारी चलता।

खेल में दंड का भी प्रावधान था , दंड दो सूरत में मिलता था, पहला तब जब कंचे फेंकते हुए गड्डे में तीन कंचे आ जाएँ तो तुरंत कंचे अगले खिलाड़ी को बारी चलने के लिए दे दिये जाते थे और उनमें एक कंचा पहले खिलाड़ी से दंड स्वरूप लेकर मिला दिया जाता था। दूसरी सूरत में दंड तब मिलता था जब निशाना बताए गए कंचे से चार उंगली से ज्यादा दूरी पर लगे, इसमें भी सभी कंचे गड्ढे के अंदर और बाहर वाले अगले खिलाड़ी को दंड का एक अतिरिक्त कंचा मिलाकर दे दिए जाते। खेल के नियम अलग -अलग स्थानो पर अलग हो सकते हैं, इसमें कंचों का कर्ज लेने और वापिस करने का भी चलन था। कुल मिलाकर यह एक अनुशासन, सटीक निशाने ,संयम और संतुलन का खेल था।

1. लेखक नें अपने किस कार्य की तुलना अपने पूर्वजों से की है?
2. कंचे को अंग्रेज़ी में क्या कहते हैं ?
   क. बॉल
   ख. मार्बल
   ग. स्टोन
   घ. स्टिक
3. यदि क्रम में पहला खिलाड़ी बारह कंचों के साथ खेल को शुरू करता है, खेल में कुल चार खिलाड़ी हैं और पहले तीन खिलाड़ियों को लगातार दंड भरना पड़ता है तो चौथा खिलाड़ी कितने कंचों के साथ अपनी बारी खेलेगा ?
   क. 12
   ख. 13
   ग. 14
   घ. 15

4. आपका पसंदीदा खेल कौन सा है ? उसके बारे में दो से तीन पंक्तियाँ लिखिए।

5. उपरोक्त गदयांश में दिये गए कंचे के खेल के नियमों के अनुसार चित्र में देखकर यह बताएं कि किस खिलाड़ी को सबसे पहले खेलने का अवसर मिलेगा ? ज्ञात हो कि सभी खिलाड़ियों ने कंचे रेखा पर खड़े होकर फेंके हैं।

क. प्रिया को

ख. सोनू को

ग. नाज़ को

घ. तीनों को

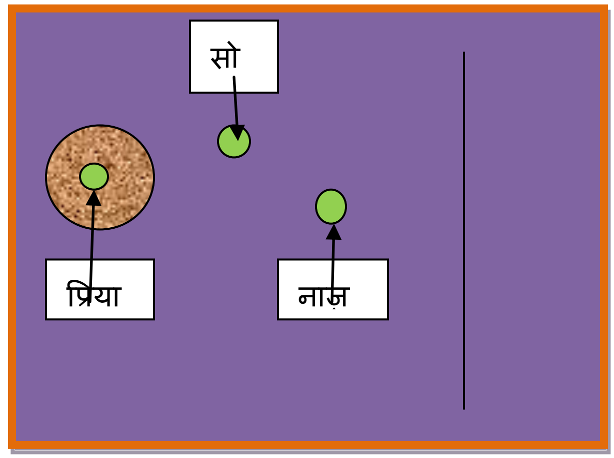

-चेतना जाठोल, बी0 आर0 पी0 हिन्दी, मातनहेल, झज्जर

प्रतिमान - 26 ('कंचा' पर आधारित गद्यांश)

बच्चों का खिलौनों के साथ संबंध सदैव से ही रहा है हम यह भी कह सकते हैं कि खिलौनों के बिना हम बच्चों की दुनिया की कल्पना भी नहीं कर सकते चाहे हम बच्चों को खिलौने खरीदकर दे या ना दे बच्चेअपने लिए किसी न किसी चीज(चाहे वह टूटे - फूटे डिब्बे हो या इसी तरह के अन्य सामग्री) को खिलौने की शक्ल ही दे ही देते हैं बच्चों को एकदम छुटपन से ही मुंह से या खिलौनों से अजीबो गरीब आवाजें निकालकर हम बहलाते हैं और बच्चे बहल भी जाते हैं। यही बच्चे जैसे जैसे बड़े होते जाते हैं ,खुद भी चीजों को जोड़ तोड़कर खिलौने बनाने में अपनी रचनात्मक ऊर्जा का खूब इस्तेमाल करते हैं। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि बच्चों की इस रचनात्मक ऊर्जा को उभार ने के लिए भरपूर मौके दिए जाएं बच्चे और खिलौनों का संबंध, उनका परिवेश तथा उनके द्वारा खिलौने बनाने की प्रक्रिया आदि चीजों पर गौर करें तो हम यह समझने का मौका मिलता है कि बच्चे खिलौने बनाते हुए क्या-क्या सीखते हैं और कैसे सीखते हैं। अपने बचपन की दुनिया में झांके तो तरह -तरह के खिलौनों का खजाना हमारी स्मृति में से निकलकर आता है। माचिस के खाली डिबियों से रेलगाड़ी ,कागज से नाव , हवाई जहाज , तितली आदि क्या - क्या नहीं बनाते थे।

प्रश्न 1 मोनू ने 4 गेंद 20 रूपये प्रति गेंद के हिसाब से खरीदी और राम को सभी गेंद 64 रूपये में बेच दी मोनू को इस सौदे में-

क. 20% लाभ हुआ

ख. 20% हानि हुई

ग. 16% लाभ हुआ

घ . 16% हानि हुई

प्रश्न दो- प्रश्न संख्या 1 के अनुसार यदि मोनू प्रत्येक गेंद को 24 रूपये प्रति गेंद के हिसाब से बेचता तो निम्नांकित में से क्या परिणाम होता

क . 10% लाभ

ख. 10% हानि

ग. 20% लाभ

घ. 20% हानि

प्रश्न 3 आपने भी कभी कोई खिलौना बनाया होगा बताइए कि आपने क्या - क्या बनाया?

प्रश्न 4 क्या आपको अपने विद्यालय में पढ़ने के साथ साथ खेलने के अवसर भी मिलते हैं यदि हां तो विद्यालय में आप क्या - क्या खेलते हैं ?

प्रश्न5"बच्चों के लिए खेलना भी आवश्यक है "कथन के पक्ष अथवा विपक्ष में अपनी राय बताइए ?

-गीता सिंधु, प्रवक्ता ,रा. व. मा. वि. भंभेवा, झज्जर

प्रतिमान - 27 ('कंचा' पर आधारित गद्यांश)

कंचे ,गिल्ली -डंडा व पिट्ठू जैसे गली -मोहल्लों के कई खेल ऐसे हैं जो बच्चों में बहुत लोकप्रिय हैं। लेकिन आजकल हर गली-मोहल्ले में क्रिकेट के खेल का जुनून बच्चों में अधिक नजर आता है। इस खेल में दो टीमें में होती हैं। प्रत्येक टीम में 11-11 खिलाड़ी होते हैं। एक टीम बल्लेबाजी करती है ,दूसरी गेंदबाजी और फील्डिंग करती है। इस खेल में तीन निर्णायक होते हैं। इस खेल में जीत के लिए अधिक से अधिक रन बनाने पड़ते हैं। खेल के समय चौके व छक्के मारकर रनों की संख्या बढ़ाई जाती है। दोनों टीमें बारी -बारी से खेलती हैं। क्रिकेट एक -दिवसीय व पांच -दिवसीय खेल खेला जाता है।

क्रिकेट का ऐसा ही जुनून मुंबई के एक सीधे -सादे मराठी प्रोफेसर के कनिष्ठ पुत्र में था , जो बल्ले को हाथ में थामे भविष्य के सपने संजोया करता था। यहां यह बताने की जरूरत नहीं है कि बात अपने मुंबई के छोरे सचिन तेंदुलकर की हो रही है। सचिन के भाग्य ने उनका सबसे पहला साथ तब निभाया जब क्रिकेट जगत के द्रोणाचार्य कहे जाने वाले रमाकांत आचरेकर ने उन्हें अपने शिष्यत्व में स्वीकार किया। आचरेकर की पारखी निगाहों ने उसी समय ताड़ लिया था कि सचिन नाम का यह शिष्य उनके पास मन से कुछ सीखने आया है और एक दिन इसके बल्ले से ऐसी धुन निकलेगी कि संसार भर में क्रिकेट प्रेमी लंबे समय तक झूमते रहेंगे। सचिन ने भी आचरेकर के साथ जमकर पसीना बहाया और केवल 13 साल की उम्र में अपने बचपन के साथी विनोद कांबली के साथ मिलकर इतिहास की रचना की। इन दोनों ने मिलकर स्कूली क्रिकेट में छठे विकेट के लिए 664रनों की विशालकाय साझेदारी की। यह सचिन के जीवन की पहली सबसे बड़ी सफलता थी और इसने उसके लिए टॉनिक की तरह काम किया और ऐसी सफलताओं के प्रति उसकी भूख बढ़ती चली गई।

प्रश्न`1 एक-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में दोहरा शतक बनाने वाला प्रथम क्रिकेटर कौन है?

प्रश्न 2 -सचिन के गुरु कौन थे ? और उन्हें किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया ?

प्रश्न 3 -आपका प्रिय खेल कौन सा है ? उस खेल से जुड़ी हुई कोई घटना या किसी अनुभव को लिखो।

प्रश्न4 -गद्यांश में आए' कनिष्ठ 'शब्द का विपरीतार्थक शब्द क्या है?

प्रश्न 5 -यदि सचिन ने किसी पारी में 25 चौके और 3 छक्के लगाए तो उसने चौकों-छक्कों से कुल कितने रन बनाए?

-किरण बाला, प्रवक्ता हिंदी ,रा. क. व. मा. वि. डीघल, बेरी, झज्जर

प्रतिमान - 28 ('कंचा' पर आधारित गद्यांश)

अपनी मस्ती में मस्त कुछ सोचते , कुछ गुनगुनाते स्कूल के लिए घर से कुछ दूर चला ही था कि अचानक मुझे सुनाई दिया कि रंगबिरंगी सुंदर फिरकिया □5 की दो। प्यारे बच्चो, जल्दी आओ। आवाज की तरफ जैसे ही मैंने ध्यान दिया तो मेरी नजर दुकान में रखे फिरकियो के डिब्बे की तरफ गई। उसे देखकर मैं बहुत आकर्षित हुआ। मैं टुकुर - टुकुर काफी देर तक उसकी तरफ देखता रहा। इतने में एक दोस्त ने मुझे हाथ लगाकर एहसास दिलाया कि स्कूल के लिए दे रहो रही है और मैं उसके साथ चल दिया। स्कूल पहुंचकर भी दिन भर मे रामन पढ़ाई में नहीं लगा। मास्टर जी क्या पढ़ा रहे थे, मैंने सुना ही नहीं। मैं तो मेरी कल्पना की दुनिया में बड़ी-बड़ी फिरकिया घुमा रहा था। मैं किसी भी तरह उन फिरकियो को लेना चाहता था। जी भरकर उनसे खेलना चाहता था। अचानक मुझे ध्यान आया कि मेरे बैग में मम्मी द्वारा फीस के लिए दिए गए □500 थे। जब अध्यापिका द्वारा फीस के लिए पूछा गया तो मैंने झट से मना कर दिया और छुट्टी के वक्त घर जाते हुए दुकानदार को पांच सौ का नोट थमाक रबड़े रोब से फिरकी देने के लिए कहा। दुकानदार ने पहले तो नोट को घूरकर देखा फिर कुछ मुस्कुराते हुए मुझे पांच फिरकिया दे दी। मुझे पैसों की कहां समझ थी। मैं फिरकिया लेकर बहुत खुश हुआ। क्योंकि जो मुझे चाहिए था, वह मिल गया और उन्हें देखते हुए ,उनसे खेलते हुए, कल्पना की दुनिया में गोता मारते हुए आज अन्य दिनों की तुलना में मैं कुछ देर से घर पहुंचा। घर जाकर देखा तो दुकानदार मेरे घर पर बैठा चाय पी रहा था। मां ने बताया कि यह बचे हुए पैसे जो तुम दुकान पर छोड़ आए थे, लौटाने आया है। उस समय मुझे कहां पैसों की समझ थी। मैं अंदर जाकर खेलने लगा। बाद में मां ने मुझे समझाया कि बेटा आपको कोई चीज चाहिए तो पहले अपने माता-पिता को बताना चाहिए। फीस के पैसे अध्यापिका को ही देने थे। आगे से आप ऐसा मत करना। मैंने सहमति के साथ सिर हिला दिया और फिर से फिरकियो के साथ खेलने लगा। और आज अपनी छोटी बेटी मुन्नी के हाथ में फिरकी देखकर मुझे अपने बचपन की यह घटना याद आ गई। आज मुझे अपनी इस बचकानी हरकत पर हंसी भी आती है और दुकानदार की ईमानदारी के विषय मे सोचकर बहुत अच्छा लगता हैं। क्योंकि आज कहां मिलते हैं ऐसे भोले- भाले बच्चे और ईमानदार दुकानदार। सच ही तो है, समय के साथ काफी कुछ बदल गया है।

1 दुकानदार ने लेखक को सारे पैसों की फिरकिया ना देकर 5 फिरकिया ही क्यो दी?

2 यदि दुकानदार लेखक द्वारा दिए गए सारे पैसों की फिरकिया देता तो लेखक को कितनी फिरकिया मिलती?

3 पहले के समय के दुकानदारों और आज के समय के दुकानदारों में क्या फर्क देखने को मिलता है? अपने अनुभव के आधार पर बताइए ?

4 दुकानदार ने लेखक द्वारा दिए गए नोट को घूरकर क्यों देखा?

5 दुकानदार ने कितने रुपए लेखक की मम्मी को वापस दिए होंगे ?

- रोशनी देवी , बी0 आर0 पी0 हिन्दी, नाहड़ ब्लाक,रेवाड़ी

प्रतिमान - 29 (प्रदर्शनी आधारित)

1. किस साहित्य के पाठकों के लिए सुनहरा मौका है ?

(क) पंजाबी साहित्य (ख़) उर्दू साहित्य

(ग) हिन्दी साहित्य (घ) अंग्रेजी साहित्य

2. यह प्रदर्शनी भारत के किस राज्य / केंद्र शासित प्रदेश में लगी है ?

(क) गुजरात में (ख़) बम्बई में

(ग) नई दिल्ली में (घ) चंडीगढ़ में

3. प्रदर्शनी से जुड़ा कौन -सा कथन असत्य है ?

1. यह प्रदर्शनी हिन्दी साहित्य के पाठकों के लिए है
2. प्रदर्शनी में कोई भी पाठक अपनी पसंद के किसी भी विषय की पुस्तकें खरीद सकता है
3. यह प्रदर्शनी प्रगति मैदान, नई दिल्ली में लगी हुई है
4. सभी महत्त्वपूर्ण पुस्तकें आधे मूल्य पर मिल रही हैं

4. नीचे दिखाई गई टेबल के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर दें :---

sr.	पुस्तक का नाम	लेखक	विधा	अंकित मूल्य / प्रति
1	गोदान	प्रेमचंद	उपन्यास	300
2	उसने कहा था	चंद्रधर गुलेरी	कहानी	250
3	आधे - अधूरे	मोहन राकेश	नाटक	270
4	चिंतामणी	रामचंद्र शुक्ल	निबंध	240

अगर रोहित ने सभीमहत्त्वपूर्ण पुस्तकों की एक - एक प्रति खरीदी हो तो प्रदर्शनी के नियमानुसार उसे दुकानदार को कितने रूपये देने पड़ेंगे ?

(क) 1060 रूपये (ख़) 960 रूपये (ग) 530 रूपये (घ) 500 रूपये

5. अगर पुस्तक मेले में 660 रूपये अंकित मूल्य की पुस्तक 330 रूपये में मिलती है तो बताओ कि पुस्तकों पर कितने प्रतिशत छुट है ?

(क) 25 % (ख़) 50 % (ग) 40 % (घ) 30 %

-सुशील कौशिक, बी0 आर0 पी0 हिन्दी, उचाना ,जींद

प्रतिमान-30 (विश्व पुस्तक मेला आधारित)

प्रश्न1. पुस्तकें मनुष्य की सोच को विकसित करती है, कैसे ?

प्रश्न 2. 'पुस्तक में होती नई खोज' से क्या अभिप्राय है ?

प्रश्न 3. किताबों का उम्र से क्या संबंध है ?

प्रश्न 4. पुस्तक-मेले क्यों लगाए जाते हैं ?

प्रश्न 5. विश्व पुस्तक मेले की कुल अवधि कितने घण्टे की थी ?

(क) 80 घंटे (ख) 99 घंटे (ग) 100 घंटे (घ) 10 घंटे

- डॉ. महेंद्र सिंह, बी0 आर0 पी0 हिन्दी,बौन्दकलां

प्रतिमान-31 (पोलियो **आधारित)**

प्रश्न1 किस आयु –वर्ग के बच्चों को पोलियो की खुराक दी जाती है?

(क) 0-2 (ख) 0–5 (ग) 2–7 (घ) 3–10

प्रश्न2–उपरोक्त चित्र के अनुसार पोलियो बूथ कहाँ निर्धारित किए गए हैं और पोलियो पिलाने की प्रक्रिया का समय क्या रखा गया है?

प्रश्न 3 –पोलियो से संबंधित दो स्लोगन लिखें या पोलियो से बचाव हेतु अपने विचार लिखें।

प्रश्न4 यदि 7 अप्रैल 2019, को रविवार है तो 7 अप्रैल 2020, को क्या वार होगा?

प्रश्न 5 –यदि एक गांव में 5 साल तक की आयु के 817 बच्चे हैं जिनमें से 723 बच्चों को पोलियो की खुराक दी गई है तो बताइए कितने प्रतिशत बच्चे पोलियो की खुराक से वंचित रह गए ?

- किरण बाला, प्रवक्ता हिंदी ,रा. क. व. मा. वि. डीघल,बेरी, झज्जर

प्रतिमान-32 (पोलियो **आधारित)**

प्रश्न 1 पोलियो के कौन से टीके की शुरुआत नवंबर 2015 में की गई थी

क. आई. वी. पी

ख. आई. टी. पी

ग. आई . पी. वी

घ. आई.पी. टी

प्रश्न 2 भारत ने पोलियो मुक्त 5 वर्ष कब पूरे किए थे?

क. सन 2015

ख. सन 2016

ग. सन 2017

घ. सन 2018

प्रश्न 3 जनवरी 2016 में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री कौन थे?

प्रश्न 4 पल्स पोलियो अभियान के पहले चरण में 25 करोड़ बच्चों को प्रतिरक्षित किया गया यदि इसके दूसरे चरण में पहले चरण की तुलना में 20% अधिक बच्चों को प्रतिरक्षित किया गया तो बताइए कि दूसरे चरण में कुल कितने बच्चों को प्रतिरक्षित किया गया?

प्रश्न 5 आपके अनुसार पोलियो से ग्रसित एक बच्चे को कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ता होगा?

-गीता सिंधु, प्रवक्ता हिंदी ,रा. व. मा. वि. भंभेवा, झज्जर

<u>उत्तरमाला-</u>

प्रतिमान -1

उत्तर-1 ख. उस समय बेटियों का मंचीय होना अच्छा नहीं माना जाता था

उत्तर-2 घ. उपरोक्त सभी

उत्तर-3 क. लेखिका को खोजने के लिए

उत्तर-4 क 40000

उत्तर-5 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

प्रतिमान -2

उत्तर-1 (ग) पाठ को पढ़ना

उत्तर-2 (ख)500 मिनट

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

प्रतिमान -3

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 1 कि.मी.

उत्तर-5 3550 रुपए

प्रतिमान -4

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 58.98 दिन

उत्तर-4 18000 रूपए

उत्तर-5 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

प्रतिमान -5

उत्तर-1 रेल-दुर्घटना में

उत्तर-2 नेपाल में

उत्तर-3 बछेन्द्रीपाल से

उत्तर-4 6 घंटे

उत्तर-5 130560 रूपए

प्रतिमान -6

उत्तर-1 रबी

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 किसान

उत्तर-4 उपरोक्त सभी

उत्तर-5 33800 वर्ग मीटर

प्रतिमान -7

उत्तर-1 बिना शोर किए

उत्तर-2 281.25 रूपए

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 पैर

प्रतिमान -8

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 क्योंकि वह भी खेलना चाहता था

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 20

उत्तर-5 हाथ

प्रतिमान -9

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 हम स्वयं लिखते हैं

उत्तर-4 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 120 अंक

प्रतिमान -10

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 2:3

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 44 मीटर

उत्तर-5 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

प्रतिमान -11

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 99.8 %

प्रतिमान -12

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 निंदनीय, निम्न

उत्तर-5 – 2:5

प्रतिमान -13

उत्तर-1 विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, शिक्षा और समाज

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 500

उत्तर-4 510 सैकिंड

उत्तर-5 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

प्रतिमान -14

उत्तर-1 माउंट एवरेस्ट

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 उपरोक्त सभी

उत्तर-4 80

उत्तर-5 ऑक्सीजन की कमी होती है।

प्रतिमान -15

उत्तर-1 सही समय पर जोखिम ले लेना चाहिए

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 दिव्याग सारथी

उत्तर-5 85%

प्रतिमान -16

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 24 वर्ष

उत्तर-5 10.5

प्रतिमान -17

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 12 फुट

उत्तर-5 3000

प्रतिमान -18

उत्तर-1 7:20 बजे

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 380 कापियां

उत्तर-4 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

प्रतिमान -19

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 विकृतियों से

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 1680000 रूपये

प्रतिमान -20

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 100 वर्ग मी.

उत्तर-5 30000 रूपये

प्रतिमान -21

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 दूसरों की भलाई करना

उत्तर-4 धन कमाने की

उत्तर-5 1020000 रूपए

प्रतिमान -22

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 चोरी के विचार से

उत्तर-4 16

उत्तर-5 56 रूपए

प्रतिमान -23

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 16.66 कि.मी.

उत्तर-5 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

प्रतिमान -24

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 1425 रूपए

उत्तर-5 116 रूपए

प्रतिमान -25

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 मार्बल

उत्तर-3 15 कंचों के साथ

उत्तर-4 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 प्रिया को

प्रतिमान -26

उत्तर-1 20% हानि हुई

उत्तर-2 20% लाभ

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

प्रतिमान -27

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 रमाकांत आचरेकर, द्रोणाचार्य

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 -वरिष्ठ

उत्तर-5 118 रन

प्रतिमान -28

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 487.50 रु.

प्रतिमान -29

उत्तर-1 हिन्दी साहित्य

उत्तर-2 नई दिल्ली में

उत्तर-3 प्रदर्शनी में कोई भी पाठक अपनी पसंद के किसी भी विषय की पुस्तकें खरीद सकता है

उत्तर-4 530 रु.

उत्तर-5 50%

प्रतिमान -30

उत्तर-1 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 99 घंटे

प्रतिमान -31

उत्तर-1 0-5 वर्ष

उत्तर-2 आंगनवाडी/शासकीय स्वास्थ्य संस्थान सुबह 8 बजे से शाम 5 बजे तक

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 सोमवार

उत्तर-5 11.50 %

प्रतिमान -32

उत्तर-1 IPV आई . पी. वी

उत्तर-2 सन 2015

उत्तर-3 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 30 करोड़

उत्तर-5 छात्र स्व-विवेक से उत्तर देंगे